निर्मला योग

द्विमासिक | वर्ष 1 अंक 2 | जुलाई-अगस्त - 1982

ॐ त्वमेव साक्षात श्री सहस्रार स्वामिनी मोक्ष प्रदायिनी,
कलकी, भगवती माता जी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः ।

सम्पादकीय

हम सभी धन्य हैं कि आज साक्षात् आदिशक्ति हमारे बीच उपस्थित हैं। गुरु पूजा के पुनीत अवसर पर गुरु दक्षिणा देना प्रत्येक शिष्य का परम कर्तव्य है।

गुरु के पावन सन्देश को मानव मात्र तक पहुँचाने से बढ़कर और कोई श्रेष्ठ गुरु दक्षिणा नहीं।

विश्वास है प्रत्येक सहजयोगी तन, मन, धन से इस पुनीत कार्य में जुट जायेगा। परम पूज्य माता जी का आशीर्वाद सदैव हमारे साथ है।

निर्मला योग

४३, बंगलो रोड, दिल्ली-११०००७

संस्थापक : परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी

सम्पादक मण्डल : डॉ० शिव कुमार माथुर
श्री आनन्द स्वरूप मिश्र
श्री आर० डी० कुलकर्णी

प्रतिनिधि : श्री एम० बी० रत्नानवर
१३, मेरवान मेन्सन
गंजवाला लेन
बोरीवली (पश्चिमी)
बम्बई-४०००९२

श्री प्रमोद शंकर पेटकर
४६९/१५, सोमवार पेठ
लालबड़ा
पुणे-४११०११

इस अंक में · · · · · · · · · · **पृष्ठ**

१.	सम्पादकीय	१
२.	तत्व की बात-१	३
३.	अनुसरणीय	१६
४.	त्योहार	१६
५.	आन्तरिक ज्ञान	२०
६.	जय निर्मलमाते जगदम्बे	३२

तत्व की बात*-१

दिल्ली विश्वविद्यालय के इस सुन्दर प्रांगण में अनेक बार आना हुआ। कोई न कोई नई बात यहां कह दी जाती है और अनेक बार लोगों को यहां जागरूती भी दी और जागरूती के बाद क्या करना चाहिए, ये भी अनेक बार मैंने समझाया। क्योंकि अंकुर का प्रादुर्भाव होना, अकुर का जागरूत होना, ये तो हर एक के लिए मनोनीत है, लिखा हुआ है और वो अगर उसमें से अंकुर निकलता है, तो वो उसका स्वाभाविक धर्म ही है सहज है, स्वैच्छिक (Spontaneous) है, वो तो होना ही हुआ। आपके अन्दर यदि यह अंकुर है ही, तो उसका अंकुरित होना तो कुछ विशेष चीज तो है नहीं।

हम लोग हर वक्त देखते हैं, हर समय देखते हैं कि हजारों, करोड़ों बीज इस पृथ्वी माता के पेट में पनपते हैं, हर समय। कोई से भी बीज को आप बो दीजिये, वो अंकुरित हो ही जायेगा। वो अपने प्रेम से, वो अंकुर को किस तरह जागरूत करती है ? वो किस प्रकार करती है, कैसे करती है, यह हम लोग नहीं जानते, क्योंकि यह उनका स्वभाव है। उस स्वभाव के अनुसार वो अंकुरित करना उनके लिए एक बहुत ही साधारण लीला सी चीज है, कोई विशेष बात नहीं है। लेकिन जैसा कि कहा गया है, ईसा मसीह ने कहा था, 'बहुत से बीज थे, कुछ बीज तो पत्थर पर पड़ गए और कुछ बीज थे, वो पहाड़ी रास्ते पर पड़ गए और कोई बीज थे जो ऊर्वरा भूमि में पड़ गए लेकिन उनमें से कोई बीज ऐसे भी थे जो बहुत ही अच्छी ऐसी भूमि में पड़ गए, जहां वो पनप गए।' वो उनके जमाने की बात है जो दो हजार वर्ष पहले उन्होंने कही थी। उसका अर्थ यह है कि, बहुत से लोग जो साधक हैं, संसार में, जो परमात्मा को खोज रहे हैं, जो परमात्मा के नाम पर कुछ भी करते रहते हैं, चाहे मन्दिर जायें, चाहे चर्च जायें, चाहे कुछ भी करें। उनमें इस तरह की श्रेणियां हैं, उनमें से कुछ तो पत्थरों से और चट्टानों से टकरा रहे हैं, जानते हुए भी कि बेकार की चीज है, उसी से अपना सिर रगड़ रहे हैं। आप कितना भी सिर रगड़ें तो भी चट्टान तो चट्टान है, चट्टान से आपका अंकुर कभी प्रस्फुटित नहीं हो सकता।

जब मनुष्य जितनी भी दखियानूसी बातें है धर्म को लेकर करता है उनसे मनुष्य धर्मान्धता में घुसता चला जाता है। वो सोचता है कि बहुत ही ज्यादा Sacrifice (बलिदान) किया है, त्याग किया है, परमात्मा के लिए। ऐसे लोगों से आप कह भी दीजिये कि ऐसी चीज से फायदा नहीं, आप ऊर्वरा भूमि में आईये, तो भी फायदा नहीं, आप ऐसी भूमि में आईये जहां आप पूरी तरह पनप जायें, पूरी तरह से शीतलता हो और पूरी तरह उसकी हिफ़ाजत हो आपको देखा जाय और जहां आपको संजोया जाय, ऐसी जगह आप आईये, तब आपका जो प्रसाद है जोकि आप अंकुरित होना कहते हैं, तो वो हो सकता है।

तो इस बात को मानने के लिए भी बहुत कम लोग तैयार हैं। बड़ा आश्चर्य है। मानव तो मेरी समझ में नहीं आता। मानव जैसा जिद्दी प्राणी संसार में नहीं है। कोई सा भी प्राणी मात्र इतना

---

*तत्व की बात पहली बार प. पू. माता जी ने फरवरी १९८१ में गांधी-भवन, दिल्ली विश्वविद्यालय में कही थी जो हम आगामी 'निर्मला योग' में छापते रहेंगे। इस वार्ता-श्रृंखला की प्रथम परिचायक-वार्ता प्रस्तुत है।

जिद्दी और हठी नहीं है। और जब कि पूरी तरह अज्ञान में हम हैं और जब कि हमारे ऊपर इतने आवरण हमने अपने दिमागी जमा-खर्च से लपेट रखे हैं, तो फिर हम सोचते हैं कि हमसे अकलमन्द और कोई नहीं है तो फिर ऐसे लोगों का इलाज किया क्या जाये ? मेरी तो समझ में नहीं आता।

जैसे कि आप धर्मान्ध लोगों को देखते हैं। मैं अभी एक मन्दिर में गई थी। पहली मर्तबा मन्दिर में गई तो बहुत भीड़ और दूसरी मर्तबा गई, तो बहुत कम लोग आये। मैंने पूछा कि भई क्या हो गया, क्यों नहीं आये ? कहने लगे कि माताजी आप से सब लोग नाराज हो गए। मैंने पूछा किस बात पर। कहने लगे कि इसलिए नाराज हैं कि आपने कहा कि भगवान के नाम पर उपवास नहीं किया करो।

किसने बताया कि उपवास करने से भगवान मिलते हैं ? क्या सारे लोग जो उपवास कर रहे थे उनको क्या भगवान मिलने वाला है ? उसको भगवान का नाम लगा देने से क्या फायदा है ? क्यों आप उपवास करते हैं ? आप जब सहजयोग में आयेंगे, तो आपको आश्चर्य होगा कि जिस दिन का आप उपवास करते हैं उसी दिन के देवता आप से नाराज हो जाते है। जैसे कि आप गुरूवार का उपवास करते हैं, जैसे कि उदाहरण के लिए किसी आदमी का पेट खराब है उससे पूछ लीजिये कि क्या आप गुरुवार का उपवास करते हैं या आप दत्ता गुरू को मानते हैं ? आप देखियेगा कि उनका पेट खराब पाइयेगा। या किसी भी गुरू को मानते हैं, उनका पेट खराब होगा। लेकिन यदि मैं कहूं कि भई गुरुवार के दिन उपवास न करो, न सोमवार के दिन करो, कोई भी दिन न करो क्योंकि ये सब दिन जो हैं, उनमें एक एक देवता के लिए रक्खे गए हैं और उस दिन वो Specially (विशेष रूप से) जागरुत होते हैं, तो उनको जागरूत रखो बजाय इसके कि उनको नाराज करो। किसी को नाराज करना हो तब आप उपवास करते हैं न, या कोई सूतक हो ? जब कोई आदमी आपसे नाराज हो जायेगा तो वो आपके घार में बैठा होगा तो परसे थाल से उठ जायेगा या अगर आप उसको खाने पर बुलायेंगे तो कहेगा कि साहब मैं तो खाने के लिए नहीं आऊँगा, मैं आपसे बहुत नाराज हूँ। मतलब, हम लोग नाराजगी जाहिर तब करते हैं, या उपवास कि जब हम किसी तरह उनको दिखा दें कि हम नहीं खायेंगे यानि रोटी बन्द करना।

फिर आप किस सिलसिले में उपवास कर रहे हैं ? मेरी आज तक समझ में नहीं आया कि इन्सान को किसने समझाया ? आप जिस दिन का उपवास कर रहे हैं जिस दिन उस Deity (देवता) का दिन है, उस चक्र का दिन है उस रोज तो उत्सव होना चाहिए, आनन्द से उनको स्वीकार करना चाहिए। जिस दिन गणेश जी का जन्म होयेगा, उस दिन आप उपवास करेंगे ? और ये भी एक छोटी सी बात लोग सुनने को तैयार नहीं हैं। गणेश जी जिस दिन पैदा हुए उस दिन उपवास मत कीजिये। श्रीराम जिस दिन पैदा हुए उस रोज उपवास मत कीजिये, श्रीकृष्ण पैदा हुए, उस रोज भी मत कीजिये, मेहरबानी से उस दिन उत्सव मनाईये। अब इससे समझदारी की बात क्या हो सकती है, जरा बताईये ? लेकिन इस कदर दखियानूसीपना अपने देश में इस कदर अन्धापन है, इस मामले में कि "ब्रह्माचार और स्त्री आचार" कहते हैं कि इस तरह इससे हम लोग ढक गए हैं कि छोटी छोटी बात पर नाराज हो जाते हैं।

अब Western Countries (पश्चिमी देशों) में बात यह है कि वहां के लोगों को बात समझायें तो उनको यह बात समझ में नहीं आयेगी क्योंकि वो विवाद से जूझ रहे हैं या आपसे बहस करेंगे। उसकी वजह है, वो भयंकर अहंकारी हैं। उनमें इतना अहंकार जबरदस्त है कि अगर कोई आदमी उनके ऊपर ऐसा जाल चलाये जिससे वो पूरी तरह

mesmerise (मेसमेराइज़) हो जायें या मन्त्रमुग्ध हो जायें या कोई न कोई बेवकूफी की बात उन्हें सुझा दे, जैसे कहे कि हम आपको उड़ना सिखायेंगे हवा में, अपने हाथ ऐसे रखें और हवा में उड़ने लग जायेंगे तो लोग उनको तीन तीन हजार पौंड (£ 3,000) देने को तैयार हो जायेंगे। ऐसी कोई बारीक बेवकूफी की बात उनको सिखाई जाये तो बड़े लोग खुश हो जायेंगे। मतलब यह है कि उन लोगों को कोई न कोई बेवकूफ़ी की तरफ बढ़ाने के लिए गति उनके अन्दर है लेकिन जब कभी समझाया जाये कि भई यह अक्ल की बात करनी चाहिए, बस एक छोटी सी बात पर नाराज हो जायेंगे।

मैं यहां लोगों को खुश करने तो आई नहीं हूं क्योंकि किसी को खुश करने की कोई बात नहीं है न ही नाराज करने की बात है। न तो नाराज करने आई हूं न खुश करने, मैं तो इसलिए आई हूं कि आपकी अपनी जो शक्ति है, जो आपके अन्दर अपका अपना आत्मा बसा हुआ है, उसे मैं देख पा रही हूं, उससे आपका मिलन करा दूं। उसमें जो कुछ आपने अड़चने डाल रक्खी हैं अपनी अक्ल से या आपकी अपनी समझ से। कोई मैं आपको बेवकूफ नहीं कह रही। लेकिन अगर कोई गलतियां हो गई हैं तो उस चीज को आपको ठीक कर लेना चाहिए।

जैसे कि आप हिन्दुस्तान में पैदा हुए हैं। ठीक है। हिन्दुस्तान की अपनी कुछ हैं, चली हुई गलत परम्परायें हैं। सही भी बहुत हैं, गलत भी बहुत हैं और उनमें से जो गलत परम्परायें हैं उनको हमने ज्यादा जकड़ लिया है बनिस्बत उनके जो कि सही परम्परायें है। अगर कोई साहब कहें कि आप हिन्दुस्तान में पैदा नहीं होते और आप लंदन में पैदा होते तो आपकी परम्परा अलग हो जाती। आप तो पहली बात इन्सान हैं। इस बात को अगर मनुष्य समझ ले कि मैं एक बीज-स्वरूप हूं और बीज होने के स्वरूप मुझे अंकुरित होना है यही मेरा परम् कर्तव्य है और कोई मेरा कर्तव्य नहीं है, और कोई चीज मेरे लिए महत्वपूर्ण नहीं है बनिस्बत इसके कि मैं अंकुरित हो जाऊं।

अब दूसरी बात अपने देश में है जो बहुत ही बुरी तरह फैली हुई है वो ये है कि धर्म हमारे यहां बिकता रहता है, सुबह से शाम तक। आप गंगाजी पर जाईये जितनी श्रद्धा हो उतने पानी में उनको उतारिये। आप मन्दिर में जाईये, जितनी श्रद्धा हो उतना रुपया दीजिये। यहां भगवान के नाम पर हर एक चीज़ बेची जाती है। मैंने सुना है भगवान का तिलक बेचा जाता है। कोई चंवर घुमाने वाले हैं, अगर वह ५ लाख रुपया दें तो वो चँवर घुमा दें। इस तरह की इतने पागलपन की बातें हम लोग परमात्मा के नाम पर करते चले आ रहे हैं, उनकी तरफ हमें मद्देनज़र करना चाहिए, देखना चाहिए कि क्या कर रहे हैं, किस चीज़ से हम जूझ रहे हैं? यह तो अहंकार को पुष्टि के लिए मनुष्य करता है, कि मैंने इतना रुपया दे दिया और मुझे चँवर घुमाने के लिए उस पर खड़ा कर दिया और मैं चँवर घुमा रहा हूं और बड़े अपने को अक्लमन्द समझे चले जा रहे हैं। यह एक अजीब बेवकूफी है या नहीं, आप बताईये? क्या ये पांच लाख खर्च करने से क्या परमात्मा आपसे संतोष करेंगे? उनको रुपये-पैसों की जरूरत नहीं है। परमात्मा को रुपयों पैसों की जरूरत नहीं है। वो कोई गरीब आदमी नहीं हैं, गरीब इन्सान नहीं है। सारी सृष्टि उनकी अपनी है। उनको रुपये-पैसों से मतलब क्या? उनको तो मालूम ही नहीं कि रुपया पैसा क्या होता है। उनको तो जन्म लेना पड़ता है सीखने के लिए कि रुपया चीज क्या होता है। कोई आसान चीज थोड़ी है मनुष्यों का पागलपन सीखना! बहुत ही मुश्किल काम है। इतने पागल होते हैं मनुष्य कि उनकी बातों को सीखने के लिए परमात्मा को बहुत मेहनत करनी पड़ती है। कोई सोपा-सरल काम नहीं है। जैसे कि कोई मनुष्य धर्म में खड़ा है, उसको यह समझ में ही नहीं आता कि यह बातें पाप-पुण्य की लोग क्यों करते हैं? यह नहीं करो,

वो नहीं करो, ऐसा नहीं करना चाहिए, अरे भाई यह करता कौन है ? .....

जैसे हमारी Grand Daughter (धेवती) है, वो पार है, पैदाइश से। हमसे कहने लगी, 'हमारे स्कूल में बहुत stupid subject (बेहूदा विषय) है, नानी'। मैंने कहा, 'कौन सा ?' कहने लगी, 'Moral Science (नैतिक विज्ञान) बड़ा ही stupid subject है।' तो मैंने कहा, 'क्यों ?' कहने लगी, 'मालूम है, उसमें क्या सिखाते हैं ? झूठ मत बोलो, चोरी मत करो। हम कोई नौकर हैं, जो हमको ऐसा सिखा रहे हैं ? गंदी गंदी बातें सिखाते रहते हैं। ऐसी कोई सिखाने की बात होती है कि झूठ मत बोलो।' वो कहने लगी कि मुझसे कहा कि दस sentence लिखो share करने पर। तो कहने लगी, 'क्या share करें' मैंने कहा कि उनका मतलब है, कि उन्होंने कहा होगा कि तुम ऐसा करो कि खाना share करो। तो कहने लगी, 'खाना तो हम share करके ही खाते हैं या इकट्ठा साथ ही खाते हैं।' उनके यही समझ में नहीं आता यह बच्चे जो पार बच्चे हैं कि गलत काम करना ही काहे को ? गलत रास्ते पर जाते ही क्यों हो ? जब हम जाते ही नहीं तो हमें बताते ही क्यों हो ?

एक किस्सा है कि एक पादरी साहब एक गाँव में गए, जहां बेचारे देहात के लोग बहुत सीधे सादे थे। उन्होंने उनको काफी कुछ सिखाया। यह हुआ तो हुआ जब जाने लगे तो उनका Farewell (विदाई-समारोह) हो गया। उसमें बेचारे देहाती लोगों ने कहा, 'कि पादरी साहब हम आपके बहुत शुक्रगुजार हैं, बड़ा धन्यवाद है क्योंकि हमको तो मालूम ही नहीं था कि पाप क्या है ? आपने हमें सिखाया कि पाप चीज क्या होती है, बहुत बहुत धन्यवाद।' तो जो निष्पाप होते हैं, जो भोले होते हैं, जिनको पता है ही नहीं ये चीज़ क्या है, मतलब ये कि बहुत मुश्किल हो जाती है मनुष्य के बारे में सीखने के लिए।

मनुष्य इतना पागलपन करते हैं कि कुछ समझ में ही नहीं आता कि इनको समझाये कैसे ? और कोई आप बात समझाईए तो वो नाराज हो जाते हैं। यहाँ पर क्या कोई election (चुनाव) है कि आपके कोई पीछे है या कोई हार-जीत है ? आप अगर जहर खाते हो तो भाई खाओ नहीं तो नाराज हो जाओगे, ऐसा तो नहीं न कोई बोलने वाला।

एक सूझ-बूझ की बात होनी चाहिए मनुष्य के अन्दर कि हम इस संसार में आए क्यों हैं, पहला सवाल ? क्या हम इसलिए आए हैं कि आकर मन्दिरों में लोगों को पैसा चढ़ाएं ? या इसलिए आए हैं कि धर्मान्धता करके उसके नाम पर लड़ते रहें ? या इसलिए आए हैं कि परमात्मा को गालियां बकते रहें और कहते रहें कि परमात्मा है ही नहीं ? हम आए किसलिए हैं संसार में, पहला प्रश्न अपने आप से पूछना चाहिए कि क्या हम अमीबा (Amoeba) से इन्सान बनाये गए तो किस वजह से ?

इसका जवाब कोई scientist (वैज्ञानिक) नहीं दे सकता क्योंकि उनसे परे की बात है। कोई scientist नहीं बता सकता कि आपको इन्सान क्यों बनाया गया ? यह सब मानते हैं कि हम Amoeba (अमीबा) से, एक छोटे से अमीबा से मेहनत करके आपको बनाया गया—ये Special (विशेष) चीज जो इन्सान है, है बड़ा मजेदार। लेकिन कभी कभी सोचती हूँ कि इनके सींग नहीं हैं, दुम नहीं है, ऐसे तो ठीक है लेकिन इतने ज्यादा हठी क्यों हैं ? यह मेरी समझ में नहीं आया। इतनी हठ तो कभी-कभी बैल या घोड़ा कभी-कभी क्षणिक करते हैं। यह तो Permanently (स्थाई रूप से) हठी लोग बैठे हुए हैं। और इनसे जूझते-जूझते मेरी समझ में नहीं आता कि इनको पार करा कर भी क्या होगा ? अब आप पूछ सकते हैं। आपसे पंतजी बतायेंगे कि न जाने कितने लोगों को हमने यहां पार किया, उनको Vibrations आने लग

गए, पार भी हो गए; कुण्डलिनी के बारे में उनको बताया; कैसे कुण्डलिनी जागती हैं, उन्होंने यहां तक देखा कि हमारे सामने जब लोग आते हैं तो उनकी कुण्डलिनी उठती है, उसका स्पंदन होता है। Triangular Bone (त्रिकोणाकार हड्डी) में कुण्डलिनी है, ऊपर चढ़ती है और ब्रह्मरंद्र को छेदती है। यह सब उन्होंने देखा है और हुआ और उसके बाद Vibrations आये और यह सब कुछ करने के बाद, बावजूद इसके कि हर तरह का उन्हें अनुभव हो चुका। उसके बाद साहब फिर वो घर में मेरा फोटो ले गए और आरती-वारती करके और फिर एक साल बाद बता दिया कि माता जी हमारे vibrations अब गायब हो गए। और क्या होगा? उसका पूरा इन्तजाम आपने कर लिया। जब कि आपके अन्दर कोई बीज पनपा है, तो उस को आप किस तरह रखेंगे? उस वक्त आप अगर उसको उठाकर फेंक दीजिएगा तो वो गल जाएगा, खत्म हो जाएगा। सीधा हिसाब है।

इस बात को लोग समझते नहीं हैं कि कितना बहुमूल्य हमें यह माँ ने दिया है। मेरे लिए तो इतना बहुमूल्य नहीं होगा शायद क्योंकि मुझे कोई इसमें ऐसी विशेष बात नहीं लगती। लेकिन आपके लिए मूल्यवान जरूर है। क्योंकि अगर आपको ये न मिले तो आप करियेगा क्या? आप लोगों को क्या होने वाला है? इसके बगैर आप लोगों का चलेगा कैसे?

पाने का तो यही है। समझ लीजिये आपने यह* बनाया और इसको ऐसा ही रखा, इसे mains से नहीं connect (कनेक्ट) किया तो इसका क्या करियेगा? अचार डालियेगा? अधिकतर इन्सान इसी हालत में हैं कि उनका अचार डालिये। किसी काम के नहीं, एकदम बेकार लोग हैं। बिल्कुल बेकार हैं परमात्मा के लिए। वे अपनी दृष्टि से अपने को तो बड़ा अफलातून समझते हैं। उन्हें सब सैलूट (salute) करें, ये करें, वो करें पर वो बिल्कुल बेकार हैं।

असल में आप परमात्मा के instruments (यन्त्र) तो बनिये, जिसके लिए आप संसार में आए हैं और इसलिए आप विश्व में बने हैं। उनके आप instrument बनें, उन्हें समझें, गहनता ग्रहण करें और उनके साम्राज्य में आप जायें। लेकिन अगर परमात्मा ने अपना साम्राज्य फैला रखा है कि आप आईये आपके लिए सुस्वागत् रखा हुआ है, सब इन्तजामात हैं आपके लिए कि आप कुण्डलिनी के सहारे आप अन्दर आईए लेकिन आप जो हैं, हठ से दरवाजे पर खड़े हैं कि नहीं साहब हम तो आयेंगे ही नहीं। क्यों साहब चौखट से ही हमको प्यार है तो हम क्या करें? इस प्रकार मनुष्य के अन्दर इतना अज्ञान है, इतना ज्यादा अज्ञान है कि कभी कभी मुझे लगता है कि दी हुई चीज का जो प्रकाश है उसे वह देख नहीं पाएगा और समझ नहीं पाएगा।

अब यहां पर न जाने कितने सालों से हम आ रहे हैं। कितने ही लोग पार हो रहे हैं लेकिन गति जो है यहां सहजयोग की वह बहुत धीमी है, विशेष कर विश्वविद्यालय में क्योंकि विश्व का विद्यालय है न! मुझे तो हंसी इस पर आती है कि जहां मुझे उम्मीद भी नहीं होती, जहां मैं सोचती भी नहीं कि इतना काम पनप जाएगा वहां तो बहुत आसानी से हो जाता है और लेकिन जो जरूरत से ज्यादा अक्लमन्द होते हैं—जैसे कबीर दास जी ने कहा है कि 'पढ़ि पढ़ि पंडित मूरख भए' और हमारे मराठी में कहा जाता है .....कि जो अति अक्लमन्द बनते हैं उनके पैर जो हैं रास्ते में घूमा करते हैं वो कुछ नहीं होती। ऐसा कुछ हाल हो जाता है।

इसलिए पहले यह सोचना है हम क्या हैं? आप आत्मा हैं। आप सिर्फ आत्मा हैं। और बाकी? बाकी कुछ भी नहीं, बाकी सब बेकार। और इस आत्मा का जो प्रकाश है, जो ब्रह्म तत्व है, जिसे कि हम Vibrations के नाम से जानते हैं, जो

*माँ का संकेत उनके सामने उस समय रखे Microphone से है।

शीतल होते हैं ये ही आपका कार्य है और कुछ नहीं बाकी सब मिथ्या है। शरीर तो आप जानते है मिथ्या है। शरीर मिथ्या है, आप रोज ही देखते हैं। इधर से मैं आ रही थी तो मैंने देखा कितने ही बड़े बड़े लोग जो आये, अब नहीं हैं। फिर आप यह भी जानते हैं, अहंकार मिथ्या है। बड़े बड़े लोग Position (ओहदों) में बैठते हैं, जैसे ही उनकी कुर्सी खिसक गई, उनको पाताल दिखाई देने लग गया। मन भी जो हैं, वो भी मिथ्या है। आप किसी के पीछे बहुत मनः पूर्वक काम करते हैं मनः पूर्वक ये करते हैं मनः पूर्वक वो करते हैं और आप को कुछ हो जाता है, कोई आपको पूछने वाला नहीं रह जाता है। बुद्धि भी मिथ्या है क्योंकि बुद्धि से जो जानते हैं, आप उसी को contradict (विरोध) करने लग जाते हैं। बुद्धि की पहुँच ही कहां तक है, जो सामने दिखाई देता है। जैसे कि ज्यादा से ज्यादा बुद्धि से आपने Science (विज्ञान) खोजा। और Science ने यह बता दिया कि पृथ्वी के अन्दर Gravity (गुरुत्व) नाम की शक्ति है। वो तो जाहिर है उसमें कौन सी बताने को बात है। वो तो किताबों में हैं, सब कुछ है। और जो कुछ भी आप पता लगा रहे हैं, उसके अन्दर है वो सब कुछ। लेकिन वो आई कैसे ? Why का उत्तर है क्या ? वो आई कैसे वहां ? वो है क्या चीज ? वो शक्ति क्या है, जो पृथ्वी के अन्दर समाई है ? इसका तो उत्तर आपने दिया नहीं। बस कह दिया कि हमारे दो हाथ हैं, हां हमारे दो हाथ हैं और फिर कह दिया कि इस हाथ के अन्दर पांच उंगलियाँ हैं, ठीक है, हैं पांच उंगलियां। ये हमने देख लिया और फिर Science से आप ज्यादा से ज्यादा यह बता देंगे कि यह किस चीज का बना है। इसको खोज-खाज के, खोज-खाज के ही इन चीजों का पता लगा सकते हैं। बता सकते हैं कि इसके अन्दर क्या है उसके अन्दर क्या है वगैराह वगैराह। लेकिन क्यों है और कैसे है इसका जवाब नहीं है। जैसे हमारे अन्दर श्री गणेश हैं, और श्री गणेश की शक्ति हमारे अन्दर है। यह जो आपको पहला चक्र दिखाई दे रहा है, मूलाधार चक्र पर ही श्री गणेश हैं। अच्छा हम यह बात कह रहे हैं कि श्री गणेश हमारे मूलाधार चक्र पर विराजमान हैं। अब आप इसका Proof (प्रमाण) दे सकते हैं science से ? कोई दे सकता है कि हमारे अन्दर श्री गणेश की शक्ति कहां है ? इसका आप कोई भी Proof दे दें, कोई भी नहीं दे सकता। क्या वजह है ? इसका जवाब आप इस अल्प बुद्धि से नहीं दे सकते। बुद्धि जो है हमेशा ही Limited (सीमित) है। मैं Unlimited (असीम) की बात कर रही हूँ।

अब Unlimited में जब तक आप नहीं जायेंगे, कि जब तक आप असीम में नहीं उतरेंगे, आप इस चीज का जवाब नहीं दे सकते हैं कि मां आप सच कह रही हो या झूठ कह रही हो। अब मैं आप से एक-दो सवाल पूछूँ कि ये बताइये कि पक्षी आते हैं, साईबेरिया से आते हैं, हमारे यहां मध्य-प्रदेश में जगदलपुर में आप पाइयेगा साईबेरिया के पक्षी, सीधे। और हर बार वही पक्षी वहां चले आते हैं। वो कैसे आते हैं ? इसका जवाब दे सकते हैं ? उनके अन्दर कौनसी शक्ति है जिसकी वजह से वो बराबर साइबेरिया से उड़कर वहां चले आते हैं ? वही गणेश शक्ति। और वही गणेश शक्ति पृथ्वी के अन्दर गुरुत्वाकर्षण शक्ति है जिसे कि आप कहते हैं Gravity और जो इन्सान के अन्दर gravity है, जब वह खराब हो जाती है, उसका वजन जब खराब हो जाता है, उसकी जब gravity खराब हो जाती है, जब उसका Self-esteem (आत्म-सम्मान) जब वो Frivolous (कमज़ोर) हो जाता है, जब उस की आँखें इधर-उधर दौड़ने लग जाती हैं, उसका मन खराब हो जाता है और उसका चित्त बिखर जाता है तब उसकी gravity खत्म हो जाती है। जब वह gravity खत्म हो जाती है तो क्या हो जाता है ? आपका गणेश चक्र पकड़ जाता है।

और जब ये गणेश चक्र पकड़ जाता है तो आपका innocence जो है, वो खत्म हो जाता है। आप चालाक हो जाते हैं। अब, चालाकी से बढ़कर महाबेवकूफी संसार में कोई नहीं है। महाबेवकूफ होता है, वही चालाकी करता है और अकलमन्द जो होते हैं कभी नहीं। क्योंकि चालाकी से आप पा भी क्या सकते हैं ? चालाकी से आप अपने innocence को तो पा नहीं सकते जो आपकी गणेश शक्ति जो आपके अन्दर Present है, वसी है। इस गणेश शक्ति से ही आप पैदा हुए हैं। आपके अन्दर समझ लीजिये कि आपके तन की शक्ल है। आपकी बीवी की दूसरी तरह की शक्ल है, और आपका जो बच्चा होगा, वो दोनों की शक्ल से किस तरह मिलकर बनता है। ये कैसे बनता है ? कोई Scientist बनाकर दिखाये। कोई Scientist अगर जमीन से पत्थर उठाकर के उसमें से बच्चा पैदा करके दिखाये। या छोड़िये फूल निकाल कर दिखाये। या छोड़िये कुछ चीज बनाकर दिखाये।

तो किस चीज का इतना अहंकार है मनुष्य को ? ये कहा जाता है कि कोई भी अपने अन्दर शरीर के अन्दर कोई सी भी Foreign चीज आए, कोई भी बाहर का चीज आए तो आपका शरीर उसको फेंक देता है। पर जब मां के पेट में बच्चा रहता है, foetus होता है तो वह फेंका तो नहीं जाता बल्कि उसको संजोया जाता है, सम्भाला जाता है, तब तक जब तक वह उस दशा में न पहुँच जाये और जब वह उस दशा में पहुँच जाता है तो उसको बराबर बाहर निकाला जाता है करीने से। ये काम कौन करता है ? आप तो नहीं क्या आप सम्भालते हैं इसे ? आप ही क्यों पैदा हुए हैं ? आपके अन्दर जो कुछ सूरत-शक्ल है वो भी श्री गणेश शक्ति की देन है। अब जब आप अज्ञान में बैठे हुए हैं तो आप इस गणेश शक्ति को नष्ट कर रहे हैं। सुबह से शाम तक आप इस शक्ति को नष्ट कर रहे हैं और इसको आप जितना नष्ट करते जायेंगे—जहां जहां ये गणेश शक्ति नष्ट हो गई, वहां वहां बच्चे पैदा नहीं होंगे। अब आप जर्मनी में जाइये, इंग्लैण्ड में जाइये—सब Minus Population ही है। अभी तो वह कह रहे हैं कि Emigration (स्थानान्तरण) नहीं होगा। Emigration उन्हें करना पड़ेगा क्योंकि सब बुड्ढे हो जायेंगे ६० साल के, बच्चे कोई होंगे नहीं तो होगा क्या ? जहां ये गणेश शक्ति नष्ट होती जाती है स्त्री में, विशेष कर पुरुष में भी, वहां पर बच्चे पैदा नहीं होते क्योंकि गणेश शक्ति से ही संसार में.....और ये गणेश शक्ति हमारे अन्दर इस Centre (चक्र) में बैठी हुई है। और इस centre के बारे में कहीं science में लिखा नहीं। अब लोग मुझसे भी कहते हैं कि मां आप जो कह रही हैं, वो किसी किताब में नहीं लिखा। अरे भई जो किताब में लिखा है वो तो उद्धृत है ही और अगर सब बातें लोग पहले से ही लिख देते तो आप किस दिन के लिए आए है ? कुछ बात बताने के लिए भी रखनी पड़ती है। और पहले बताने से भी फायदा क्या ? उससे तो नुकसान ही होगा। जो चीज पहले बताई गई, उससे बड़ा नुकसान हो गया लोगों को। अब जैसे पहले बताया गया था कि भई शराब मत पियो क्योंकि वह चेतना के विरोध में पड़ती है। अगर आपने शराब पीना शुरू कर दिया तो आपका जो है नाभि चक्र खराब हो जायेगा। सीधा हिसाब। क्योंकि आपको चेतना जो है—जिस चेतना से आपको परमात्मा को खोजना है वो आपकी दब जाती है। वो आपके नाभि चक्र में जो चेतना है, जिससे आप भगवान को खोजते हैं, जिससे आप evolve (उत्कृत) हुए हैं जिससे आप अमीबा से इस stage (स्तर) में आए हैं। आपका evolution (उत्क्रांति) रुक जाती है अगर आपने शराब पीना शुरू कर दिया। सीधा हिसाब। आप evolve नहीं होते, आप पार नहीं हो सकते। इसलिए कहा कि शराब मत पियो। अब अगर किसी से कहो कि शराब मत पियो तो उसकी हद

इतनी कर डाली उन्होंने। एक हद तो ये हो गई कि कहा कि शराब मत पियो तो भगवान के ऊपर में उमर खय्याम साहब हो गए, अपने बच्चन जी हैं, बड़े भारी कवि घूमते हैं। उन लोगों ने निकाला कि भई क्या रखा (इसमें) बुरा? What's wrong? What's wrong? Nothing is wrong. If you want to become stones—तो क्या है? There is nothing wrong. (बुरा क्या है? बुरा क्या? बुरा कुछ नहीं है। अगर आप पत्थर बनना चाहें—तो क्या है? इसमें कुछ बुरा नहीं।) आप जाकर कुछ भी खाइये, पीजिये, हर्ज क्या है? wrong कुछ नहीं है। Right (अच्छा) और wrong (बुरा) की तो बात क्या है, आपकी तो evolution की शक्ति खत्म हो गई। सीधा हिसाब। लेकिन एक हद तो यह हो गई कि भगवान के नाम पर पचासों गालियां, और सारे जितने साधु-सन्त हैं उनके नाम पर गालियां। और दूसरी हद यह है कि शराब नहीं पीने का है, तो ये हद हो गई कि दूसरी हद हो गई कि शराब जो पीयेगा उसके हाथ काट डालो, पैर काट दो, सर काट डालो। ये भी कोई नमूना है? एक तो extreme (अति) यह है कि शराब पीना क्या है, मतलब तो बहुत बड़ी चीज हो गई। शराब क्या है, उसके ऊपर ग़ज़लें हों, फसाना हो गया, ठिकाना हो गया, सब चलता है। और दूसरी हद ये कि जब पहुँचे कि आपने शराब पी तो गर्दन आपकी कट गई। भई एक बार किसी ने शराब पी, ठीक है एक बार पी तो उसका नशा तो उतार सकती हूँ लेकिन गर्दन निकाल दी तो उसका क्या करूँ? Out of proportion जा रहे हैं। अब इसी तरह अनेक चक्र अपने अन्दर इस तरह से हैं, जिनके बारे में खुलकर बतायेंगे। मेरे ख्याल से हम किसी भी चक्र के बारे में खास जानते नहीं। अगर जानते होते तो हम लोग उसके साथ ऐसे खेल-खिलवाड़ नहीं करते।

तीसरा चक्र हमारे अन्दर जो है बहुत महत्वपूर्ण है जो कि दिल्ली शहर के अन्दर बहुत ही ज्यादा पकड़ रहा है, नई दिल्ली में ज्यादा Old Delhi में कम—स्वाधिष्ठान चक्र। स्वाधिष्ठान चक्र वो चक्र है जिससे हम सोचते हैं। जब हम सोचने लग जाते हैं बहुत ज्यादा, तो यह चक्र बहुत ज्यादा चलता है और इसके अन्दर एक शक्ति होती है जिससे हमारे पेट का जो मेद है, जो Fat cells हैं, उनको हम convert (बदलते) करते हैं, brain (मस्तिष्क) के लिए। अब सोचने की लोगों को इतनी बीमारी है कभी कभी मेरी समझ ही नहीं आता कि सोचने की जरूरत क्या है। जैसे समझ लीजिए कि अब किसी आदमी को बाजार जाना है। भई उठाओ झोला, जाओ बाजार। देखो क्या सब्जी है, लेकर आ जाओ। सबसे पहले घर में discussion शुरू हो रहा है कि आज भिन्डी बनाये या लौकी बनाये। बाजार गए तो दोनों सब्जियां नहीं। पहले एक घन्टा वहां discussion (बहस) हुआ, Planning (योजना) हो गया, बाजार गए तो वहां दोनों सब्जियां नहीं। तीसरी लेकर आ गए जिसका कोई इन्तजाम नहीं। हर चीज में इतना सोचकर के हम लोगों ने कौन सा तमाशा करके रक्खा हुआ है, बोलिये। यही तो लपेटना, मैं कहती हूँ। आधे तो पहले, तो आधे को ऊपर से लपेट लिया।.....वो आये, बड़ा सलाह मशवरा दिया उन्होंने जैसे कहते हैं न ऊँट पर बड़े अक्लमन्द आये बैठकर। तो उन्होंने कहा कि हम आप से सलाह मशवरा करते पर हम ऊँट पर आये हैं। उन्होंने कहा कि भई ऊँट से उतरो। कहने लगे, नहीं साहब हम तो ऊँट पर से ही सलाह मशवरा करेंगे। तो दूसरा प्रश्न शुरू हो गया, सलाह मशवरा तो गया एक तरफ, अब ये हुआ कि ऊँट के साथ इन्हें अन्दर कैसे ले जायें। दूसरी ही Problem (समस्या) शुरू हो गई। याने जो Advisor General जो थे वो ऊँट पर ही जा रहे हैं। अब इन ऊँट वालों का क्या किया जाए। अब दूसरी लपेटन शुरू हुई। कहा कि अच्छा अगर ऊँट वाले आ रहे हैं, तो ठीक है, ऐसा करो—कि प्रश्न तो ये था कि इनको अन्दर कैसे लाया जाये। तब ये हुआ

कि अच्छा यह है कि इतना बड़ा भारी जो दरवाजा बना हुआ है उसको गिरा दें। इसके अन्दर से वो अन्दर आयेंगे। जब तक महाशय अन्दर गए तो जो प्रश्न थे वो तो एक तरफ रह गए, इतना ही एक प्रश्न खड़ा हो गया कि इन्होंने ही सब चीज गिरा फिराकर रख दी।

इस तरह हमारा Planning (योजना बनाना) होता है, इस तरह का हमारा सोच विचार है। तो जो Basic Problem (बुनियादी समस्या) है उस Problem की ओर तो चित्त नहीं बाकी दुनिया भर की। क्या basic problem है हमारी ? क्या basic problem है ?

Basic problem एक ही है कि हमने अपने को जाना नहीं। हम जानते ही नहीं कि हम संसार में क्यों आये हैं—पहला। और दूसरा यह कि उस को हमें जानना चाहिए। उसे किस तरह से जाना जाए—ये ही तो हमारी basic problem है। और इसके लिए हमने क्या किया ? सूर्य पर गए, चन्द्रमा पर गए, इधर गए, उधर गए। और पाया क्या ? ये ही जाना कि आप चीज क्या हैं ? आप हैं क्या ? इसी को नहीं जाना बाकी दुनिया भर की चीज आप जानते रहिये। जैसे कि वो जो आदमी को बुलाया था सलाह मशवरा करने वाला, उसने आकर सब तहस-नहस कर दिया। उसी तरह से हमारा सारा विचार हमें तहस-नहस सुबह से शाम तक करवा रहा है और आज अब इस दशा में इन्सान आ गया है कि जब जब उसकी ओर मेरी नज़र उठती है तो मैं देखती हूँ, पहले जमाने में इतने ज्यादा सोच विचार का धंधा नहीं चलता था। पहले लोग शान्त थे, हर चीज सोचते नहीं थे। बहुत सी चीजें accept (मान लेना) कर लेते थे। बहुत सी चीजों के साथ--जैसे सामने आ जाये, चलो भई ठीक है ऐसे ही। आजकल ये है, सोचना विचारना। तो क्या वो ऐसे जुट गए हैं सोचने विचारने में कि एक मिनट भी अपना विचार नहीं रोक पाते। उनका विचार एक क्षण भी नहीं रुक पाता। ऐसा लगता है जैसे कि उनके अन्दर से विचार के दो सींघ निकलते चले आ रहे हैं बाहर (मुझको दिखाई देते हैं)·····अब एक मिनट भी उनसे कहें कि विचार रोकें, तो विचार रोक नहीं पाते, ये उनकी दशा है। माने ये कि ये बह गए विचारों के अन्दर, विचारों ने इनको हावी कर दिया। जितने बाहर के लोग हैं जितना पढ़ा-लिखा, सोचा-समझा जिनको आप समझते हैं, वो आपके अन्दर हो गए हैं और आप हो गए हैं बाहर आपको आप खोजने से मिलते ही नहीं।

अति सोचने से भी स्वाधिष्ठान चक्र खराब हो जाता है। अब आपको कोई कहेगा कि मां ये कैसे हो सकता है, वगैर सोचे कैसे हो सकता है। भई पहले से क्या सोचते हैं ये ही आज तक समझ में नहीं आया कि आप पहले ही से क्या सोचते हैं। अगर पहले ही सोचकर काम होता तो उस तरफ जाने की जरूरत ही क्या है ?

समझ लीजिए हमें गांधी-भवन जाना है अगर हमें गांधी-भवन आने का है तो हम चल दिये। रास्ते में पूंछ लिया भई कहां जाना है, और और यहां (गांधी-भवन) आ गए। अब पहले से हम सोचने लग गए कि हो सकता है अगर गांधी-भवन जाना है तो इधर से जाएं फिर उधर से जाएं फिर उधर से जाएं, क्या करें ? फिर ऐसा करते हैं इस तरफ से चलेंगे तो कहते कहते किसी ने कहा कि तुम उस तरफ से उतरो, तो अच्छा रहेगा। भई आप चल पड़ो, चार आदमियों से पूंछ लो रास्ते में और पहुँच जायेंगे। पहले ही आपने एक घन्टा देर लगा दी पता लगाने में कि गांधी-भवन कैसे पहुँचना है। अब पता हुआ कि आप वापस आपनी मंजिल पर आ गए, पहुँचे नहीं। इसी एक चक्कर में आप घूम गए और फिर वापस। और अगर आप जानते भी नहीं जानना है अभी हमें। हमें अभी देखना है, इस चीज पर आदमी

विचार करता है पर अभी हमने जाना नहीं है वह सोचता क्या है, अभी तो हमें देखना है। देखें आगे होता क्या है ? आगे चलें देखें क्या होता है ? जब आदमी अपनी बुद्धि में इस तरह खुला दिमाग रखता है वो सही मंजिल पर पहुँच सकता है। और जो आदमी पहले से ही Preconditioned mind है उसका, पहले से ही उसने सब सोच लिया कि भगवान का मतलब ये होता है और कुण्डलिनी का मतलब यह होता है। बहुत से लोग तो यह कहते हैं कि कुण्डलिनी पेट में होती है। मैंने कहा मैंने तो नहीं देखी। अगर कोई आकर मेरा माथा खाये कि आपका हृदय जो है यहां पर होता है तो उसे क्या कहा जाये। होता नहीं है, होता जहां है वहीं है। कम से कम आप देखिये तो सही वहां है या कहां है। इस तरह से जिद आदमी बना लेता है और जो कुछ किताबों में लिखी हुई चीजें हैं वो कोई last word (आखिरी शब्द) तो है नहीं, कि भई आखिरी तत्व तो है नहीं जिसके आगे कोई तत्व नहीं। अगर ये होता तो आप संशोधन किस चीज का करोगे।

तो मनुष्य की बुद्धि में संशोधन होना चाहिए, थोड़ा दिमाग होना चाहिए। Preconceived idea नहीं होना चाहिए। वो Open minded (खुले-दिमाग वाला) होना चाहिए। और खुले-दिमाग से जब आप देखेंगे तो आप जो सत्य है उसको फौरन पकड़ लेंगे। बजाय इसके कि हां, किसी ने कहा भई कि हमने किसी से कहा कि आप वहां जाइयेगा तो वहां आपको घन्टाघर दीखेगा। ठीक है। हमने घन्टाघर देखा था, वही घन्टाघर तो उन्होंने कहा हो सकता है कि आप किसी और घन्टाघर पहुँचे। Preconceived ideas जो हैं, उससे आदमी इतना conditioned हो जाता है कि उसको समझाना मुश्किल हो जाता है कि भई आगे जो सत्य है वो सामने प्रकाशित होने वाला है, उसे आप स्वीकारें। क्योंकि उसकी बुद्धि इतनी high-class (उच्च श्रेणी) की हो जाती है कि लोग उनसे बात करने में भी जब तक आप 5 Year plan (पंच वर्षीय योजना) की बात न करें तब तक आप किसी चीज पर बात नहीं कर सकते। इसलिए मनुष्य को अपना विचार जो है ऐसा रक्खे—कि देखा जायेगा। जो सामने होगा, वही होगा, वही होना है, चलिए जैसा हो, देखेंगे। कम से कम सहजयोग के लिए ऐसा ही विचार रखना चाहिए। आप अगर पहले ही से बहुत पढ़ लिखकर आए हैं तो आप मुझसे ऐसे सवाल पूछियेगा जिसका कि कोई उत्तर नहीं पायेंगे। मुझसे लोगों ने ऐसे ऐसे सवाल पूछे हैं कि मुझे कभी बड़ा आश्चर्य लगता है। इसलिए मुझे आपसे यह कहना है कि पहले आप अपने मन से कहें या बुद्धि से कहें, कि इस वक्त आप जरा शान्त हो जाइये और अब जरा आप इस चीज को पा लीजिए। क्योंकि चक्रों का खराब करना बहुत आसान है, उनका ठीक करना बहुत मुश्किल।

स्वाधिष्ठान चक्र के खराब हो जाने से अनेक बीमारियां होती हैं। एक बात अच्छी है कि बीमारी हो जाती है। अगर बीमारी न हो तो आदमी अपने को कभी न ठीक करे। क्योंकि बीमारी के सिवा लोग समझ ही नहीं पाते हैं कि और भी कोई चीज अन्दर खराब है। वो तो सिर्फ बीमारी समझता है। अधिकतर लोग तो सिर्फ बीमारियां ठीक करने आते थे। अब उनको समझ में आया है कि और भी अशुद्धियां, खराबी हो गई हैं जिन्हें ठीक करना है। लेकिन पहले तो सिर्फ बीमारी ठीक कराने आते थे।

अब सबसे पहले बीमारी, जो आदमी बहुत Planning करता है, उसे कौन कौन-सी होती है ? उसको सारी पेट की बीमारियां—जैसे liver (जिगर) खराब, liver जरूर खराब होता है। क्योंकि liver जो है वो सारे poisons (विषों) को अपने शरीर से बाहर निकालता है। लेकिन जो आदमी जरूरत से ज्यादा सोचता है वो बेचारे

स्वाधिष्ठान चक्र को इतना थका देता है कि वो liver को देखता ही नहीं और liver पनप सकता ही नहीं। उसकी जितनी भी चेतना है, जो भी उस की awareness (अवेअरनेस) है वो सारी इसमें लगी रहती है कि वो किसी तरह जल्दी-जल्दी brain cells बनाए और brain (मस्तिष्क) को काबू में रखे, Brain को तो सप्लाई (Supply) करे। तो सारी emergency (आपात स्थिति) brain में आ जाती है और उसके लिए लिवर (Liver) जो है बेकार है, Liver की तरफ चित्त नहीं जाता है और Liver खराब हो जाता है। Liver खराब होने के बाद जब उस आदमी को cirrhosis हो जाये या Liver cancer हो तभी डाक्टर लोगों को पता होता है और वो इतना बता सकते हैं scientifically (वैज्ञानिक रूप से) कि आप इतने दिन में मर जायेंगे। मेरे पास तो ऐसे ही लोग आते हैं जो certificate (प्रमाण-पत्र) लेकर आते हैं कि मां हमको तो बता दिया है कि आप एक महीने में चल बसेंगे। बहरहाल यह हो गया कि वो ठीक हो गए हमारे पास आने पर। दरअसल अब यह आपका स्वाधिष्ठान चक्र खराब है और वो ठीक होने पर आपकी बीमारी ठीक हो जायेगी।

उससे दूसरी जो खराब बीमारी होती है वो है Diabetes (मधुमेह) क्योंकि यह ही एक चक्र है जो सबको Supply करता है। तो आपके Pancreas out of gear (खराब) हो गए और आपको diabetes हो गई और लोग कहते हैं कि diabetes uncurable (लाइलाज) है। बिल्कुल ही uncurable नहीं है क्योंकि आपने ही बीमारी ली और आप ही इसे ठीक कर सकते हैं। अब diabetes की बीमारी आपको अगर हो जाये तो लोग कहते हैं कि साहब इसमें Sugar जायेगा, ऐसा होता है वैसा होता है। पर क्या आपने कभी सोचा है कि ऐसा भी हो सकता है कि हमारे liver (जिगर) ने extreme line (पराकाष्ठा) ली है तो balance देने के लिए हमें यह बीमारी शुरू हुई है। यह balancing बीमारी है जिससे आदमी समझ ले कि हमने बड़े unbalance से काम किया है। बहुत ज्यादा जब आदमी सोचता है, तो diabetes की बीमारी होती है। जो लोग सोचते ज्यादा नहीं हैं जैसे villagers (गाँव वाले) वगैरह हैं, उनको कभी dibetes नहीं होती। वो हर समय carbohydrates खाते रहते हैं। वो तो एक cup में एक मन चीनी भी डालें तो कहेंगे फीका है। बहुत मीठा खाते हैं तो उनको तो हमेशा फीकी ही लगती है। खासकर मेरठ में अगर आप जायें तो आप लोगों को अगर चाय चाहिए तो ऐसा लगेगा कि उन्होंने चीनी घोलकर पहले, फिर चाय बनाई है। ऐसा नहीं लगेगा कि चाय बनाई है। वो तो चीनी ही बनाते हैं। तो इस तरह के लोगों को तो कभी diabetes नहीं होती। कभी आप देखियेगा, देहात के लोगों को diabetes नहीं होती, शहर के लोगों को ही होती है क्योंकि बहुत सोचते हैं। और सोच सोच के क्या बनाया? एटम बम (Atom bomb) और क्या बनाया? और यह बनाकर भूत ऊपर रख दिया और नीचे सब डर रहे हैं। अब एटम बम बनाने से इतना जरूर फायदा हो गया है कि सब सहम गए। इतनी बेवकूफी की, उसका यह फल निकल आया। अब इससे ये जो भूत ऊपर बैठ गए हैं तो कहीं बटन दबा देंगे तो हम सब खत्म हो जायेंगे। तो यह बहुत अक्लमन्दी करके निकाला है जो भी उन्होंने अन्वेषण किया उस अन्वेषण में उन्होंने ऐसा इन्तजाम कर दिया है कि एक क्षण में सारी दुनिया साफ की जा सकती है। अब सब सहम करके बैठे हैं कि साहब ये क्या हम कर गए। यह तो पता नहीं था हमें कि खोज खोज के अपने ऊपर बारूद लगा दी हमने। अपने ही सर पर बारूद रख करके अब इतना जीना मुश्किल हो गया है। अब सब Shocked (घबराई) हालत मै हैं और अब बड़ी बड़ी किताबें निकल रही हैं कि अब तो थोड़े दिन में दुनिया खत्म हो जाने वाली

है। पूरा इन्तजाम इन्होंने कर लिया। सब Anti God Activities (भगवान के खिलाफ काम) हैं। सोच समझ कर जो चीज़ की कौन-सा आपने विशेष नाम किया। मेरी तो आज तक समझ में नहीं आया। अपना सोच जरा सा कम करिये। और विचार भी थोड़ा कम करिये लेकिन कहने से भी तो होगा नहीं। अगर कहूँ कि विचार नहीं करो, विचार नहीं करो, तो नहीं होगा।

मैं कहूँ कि अपना Speedometer जरा कम करो। Speedometer के बारे में मैंने लोगों से बताया और मैं आपसे भी बताती हूँ। हमारा Spleen (तिल्ली) जो है वो Speedometer है। और जब खाना खाते हैं तो कोई न कोई ऐसी बात सोचने लग जायें, मतलब बड़े विचारक लोग हैं न! बड़े काबिल, तो काबलियत अपनी झाड़ने के लिए जब खाना खाते हैं तभी उसी समय नौ बजे आयेगी news (समाचार), जब आप खाना खा रहे हैं। तब आपको इत्मीनान से खाना खाना चाहिए। आपकी बीवी आपको पंखा झल रही है, आराम से बैठकर आप खाना खा रहे हैं। उस समय news (समाचार) आयेगी कि फलानी जगह दुर्घटना हो गई। आपका खाना गया काम से। लगे आप सोचने उसी बात के लिए। सवेरे जल्दी भागना है क्योंकि Office (दफ्तर) नौ बजे पहुँचना ही चाहिए। तो एक हाथ में आपका बक्सा, एक हाथ में आपकी छतरी, और आपके मुँह में कुछ ठूँसा जा रहा है। आप इस हालत में भागे जा रहे हैं बाहर। पीछे दूध लेकर के कोई और दौड़ रहे हैं। ये तो आपके खाने की व्यवस्था है।

इसमें आपका जो speedometer (गति-मापक) है, जो आपका spleen है, वो Crazy हो जाता है, पागल हो जाता है और इसी से आपको Blood Cancer (रक्त का कैंसर) की बीमारी हो जाती है। अब हम लोगों ने कितने ही Blood Cancer ठीक किए हैं जिनको कि Doctors (डॉक्टरों) ने certificate (सर्टीफिकेट) दे दिये थे कि आप एक महीने में मर जायेंगे। इसका मतलब नहीं है कि आप दुनिया भर के Blood Cancer के केस मेरे पास ले आएं। मतलब ये है कि आप लोग तो यहां आए हैं अपने speedometer लेकर लेकिन हम क्यों इससे ही बँध जायें। इसका मतलब ये नहीं कि आप लेट लतीफ हों, ये भी नहीं है।

इसका सबसे बड़ा मतलब ये है कि आप उतना ही करिये जितना आपके बस का है। आप इन्सान हैं। मशीन भी जितना नहीं कर सकती उससे ज्यादा आप क्यों करना चाहते हैं और करके भी आपने क्या किया—वही Atom bomb (परमाणु बम या एटम बम)।

क्या किया है आपने? मैं तो इन्सान से यह पूछना चाहती हूँ कि उन्होंने सीखा है: आपस में लड़ना कैसे चाहिए, झगड़ा कैसे करना चाहिए, ग्रुप बाजी कैसी करनी चाहिए, किस तरह से Murder (कत्ल) करना चाहिए। दूसरे देश के लोगों को War (युद्ध) के नाम पर किस तरह खत्म करना चाहिए। ये सब इन्तजाम आपने कर लिया है। और क्या किया है? कौन सा अच्छा काम आप लोगों ने आज तक किया है? कहने लगे कि साहब हमने social work (समाज कार्य) किया है। यह social work तो आपके लिए इसलिए तैयार हो गया क्योंकि आप बेवकूफ हैं। अगर पहले से आपने बेवकूफी नहीं की होती और आपने लोगों को इतना सताया नहीं होता, ऐसे-ऐसे Customs (रीति-रिवाज) नहीं बनाते जिनसे सब को तकलीफ हो रही है, तो कभी न होता ऐसा, यानि कभी आपको social work की जरूरत ही नहीं पड़ती। मतलब है कि जो लोग धर्म में खड़े हैं जरूरत ही नहीं उनको धर्म सिखाने की, कि आप अधर्म मत करो। जो धर्म में ही खड़े हैं उनको क्या जरूरत है?

यह चक्र (भवसागर या Void) हमारा धर्म बताता है। हमारा धर्म मानव धर्म है। और मानव

धर्म में दस हमारे अन्दर गुण होना जरूरी है। यदि हम में ये गुण नहीं हैं तो हम मानव नहीं हैं, या तो हम जानवर हैं या शैतान हैं। ये दस गुण हमारे अन्दर जो हैं वो हमारे इस चक्र के चारों तरफ से बंधे हुए हैं और बीच में जो हमारे नाभि चक्र है उसमें ये हमारे दस धर्मों की पंखुड़ियां हैं। इन धर्मों की ओर हमारा विशेष ध्यान है।

अब धर्मों का मतलब ईसाई, मुसलमान, हिन्दु या आपस में सर फोड़ना नहीं है। हमको तो धर्म का मतलब यह मालूम है कि इधर ये एक निकला, उधर से दूसरा निकला और लड़ाई हो रही है। अरे भाई क्या हो गया ?—धार्मिक झगड़ा हो गया। धार्मिक झगड़ा भी क्या हो सकता है, ये भी हमारे जैसे बेअक्ल लोगों की समझ में नहीं आ सकता। जो कि धर्म जो है जिसकी धारणा होती है तो मनुष्य जो है तो ऐसी कोई चीज बन जाता है ऐसा उसका व्यक्तित्व कुछ ऐसा हो जाता है जिससे वो अपनी सार्वजनिकता कहिये या जिसको कि Collectivity (सामूहिकता) कहते हैं उस को प्राप्त हो जाता है, वो "वह" हो जाता है। वो Collective हो जाता है। वो झगड़ा कैसे करेगा ? क्या आप अपनी उँगलियों में उँगलियों से झगड़ा होता है, क्या ये एक दूसरे को मारती हैं ? आप उस तरह हो जाते हैं, आप में Collectivity आ जाती है। जब यह धारणा मनुष्य में हो जाती है--यह धारणा जानवर में नहीं होती। यह धारणा जब मनुष्य में हो जाती है, जब धर्म की धारणा होने के बाद यह धर्म हम में जागरूत हो जाते हैं, उस समय कुण्डलिनी जागृत होकर के चक्र को भेदती हुई ऊपर चली जाती है, तब मनुष्य के अन्दर में सामूहिक चेतना जागृत होती है, जागरूत हो जाती है।

इसलिए मैं कह रही हूँ—यह lecture देने की बात नहीं है, यह अपने आप ही घटना हो जाती है। खुद ही महसूस करने लग जाते हैं कि आपके अन्दर क्या दोष है और दूसरे के अन्दर क्या दोष है। दोष बाह्य दोष-नहीं कि साहब वो साहब थे और वो लाल रंग का कपड़ा ही पहनते थे या वे साहब थे उन्होंने ऐसा कर दिया या वो उस Political लीडर (राजनीतिक नेता) के साथ थे और उन्होंने दल बदल दिया, यह चक्रों में, सूक्ष्म में आपके तत्व में कौन सा दोष है यह आप समझ जाते हैं और आपके दोष, तत्व में खराबी का पता पार होने के बाद, आपको चल जाता है। इतना ही नहीं, सहजयोग में गहरे उतरकर के जब आप इसकी पूरी विद्या को सीख लेते हैं—इस "निर्मल विद्या" को सीख लेते हैं; या इसको कहना चाहिए कि अपने Master हो जाते हैं, अतिमानव संत हो जाते हैं आप में धर्म जागृत हो जाता है, आप धर्मातीत हो जाते हैं। आपकी चेतना में नया आयाम (New dimension) आ जाता है, आप चैतन्य लहरियां (Vibrations) महसूस करने लगते हैं, आपकी शारीरिक, मानसिक, समस्याएं आपसे दूर हो जाती हैं।..... इसलिए हमें समझ लेना चाहिए कि कम से कम हमारी तन्दरुस्ती जो गुरू न ठीक रख सके, तन्दरुस्ती का जिसको सम्भाला न जाये, ऐसे गुरू के पास जाने की जरूरत नहीं है।

सहजयोग में इस दृष्टि से आप पारंगत हो जाते हैं किस तरह हमारी तन्दरुस्ती ठीक रहनी चाहिए। किस तरह से हमारे चक्रों में दोष है, उसे ठीक करना चाहिए, कम से कम। क्योंकि आप स्वयं डाक्टर हो जाते हैं, आप ही दवा हो जाते हैं और आप ही diagnosis (निदान) करते हैं। मनुष्य ही सब कुछ हो जाता है, मनुष्य में ही सब कुछ है। जो कुछ भी बाह्य में आप देखते हैं वो सभी भीतर है। जैसे आप यहां बैठे हैं और आपको पता लगाना है कि आपके किसी सम्बंधी की तबीयत कैसी है। आप टेलीफोन कीजिए, पैसा खर्च करिये, ऐसी कोई जरूरत नहीं। आप खुद ही देखिये, कैसी तबीयत है आपको स्वयं पता चल जाएगा कि कौन से चक्र में पकड़ आ रही है। अगर left (बांयी तरफ) में

पकड़ आ रही है, तो इसका मतलब है कि उनके मन पर pressure (दबाव) है और अगर Right (दांयी तरफ) में आ रही है तो कुछ शारीरिक है। और उसके बाद चक्रों पर पता लगा लीजिये कि कौन से चक्र में बाधा है। जो Code है उनका Decoding हो गया है और अगर आप समझ लें तो आप फौरन बता सकते हैं कि इस वक्त उनकी क्या हालत है । यहां बैठे बैठे आप उनको बंधन दें और उनको Vibrations दें तो वहां वो ठीक हो जायेंगे । यह सब आप कर सकते हैं। कब, जब आप इस शास्त्र को सीख लेते हैं।

ये नहीं कि आप पार हो गए कहने लगे, "माताजी ने हमें पार कर दिया। फोटो ले जा रहे हैं क्योंकि हम पार हो गए।" इसके बाद एक साल बाद मिले, कहने लगे, "माता जी क्या बताएं हमारे तो Vibrations अच्छे नहीं हैं।"

आज जो पंत जी ने कहा, वो बिल्कुल सही बात है। लोग यहां आते हैं, पार हो जाते हैं, फिर खो जाते हैं। चलती का नाम गाड़ी। माता जी आये, पार हो गये, काम खत्म। फिर आए, जैसे थे फिर वही शुरू हो गया। "माता जी हमने पकड़ लिया, ऐसा हो गया, वैसा हो गया।"

यह गहन गम्भीर बात है, यह frivolous (हंसी-मजाक) बात नहीं है। इसलिए मैं आपसे कहूँगी कि भारतवर्ष में हर चीज आसान है, हर चीज मिल सकती है। यह ऐसी योग-भूमि है। यहां इतने बड़े बड़े अवतार हो गए, इतनी बड़ी बड़ी यहां चीजें हो गई हैं। यहां का सारा प्रान्त जो है vibrated है। यह विशेष ही भूमि है, इस लिए यहां पार भी लोग खट से हो जाते हैं। बड़े ही जल्दी आप पार हो जाते हैं। जैसे कि जितने भी Foreigners (विदेशी) आए हैं और यहां बैठे हैं, एक एक आदमी पर तीन तीन महीने हाथ तोड़े हैं मैंने और आप यहां बैठे हैं थोड़ी देर में देखियेगा Vibrations आ जायेंगे, हाथों में। वैसे लेकिन कल की मीटिंग में आप नहीं आयेंगे, वो भी बड़ा मुश्किल हो जाएगा। "क्या बात थी ?" "माताजी वो ऐसा था कि मैंने कहीं जाना था." वो तो Religious duty (धार्मिक कर्तव्य) हो गई न।" 'कैसे मना करता, मैं चला गया।"

उसकी गहराई, उसकी गम्भीरता, उसकी विशेषता, उसकी महानता, कुछ हमारी समझ में नहीं आती है। ये लोग जो तीन तीन महीने मेरे हाथ तुड़वाते हैं, ये लोग समझते है। तो बजाय इसके कि आप लोग जमें ये लोग जम रहे हैं और आप उखड़े-उखड़े घूम रहे हैं। हिन्दुस्तानी सहज योगियों का वाकई ये हाल है कि उखड़े-उखड़े घूमते हैं। उनमें तो गहनता नहीं आती। ज्यादा से ज्यादा यह होगा कि चलिए मेरे पेट में दर्द हो, वो ठीक कर दीजिये। मेरे लड़के की शादी करा दीजिये या और कुछ नहीं तो जरा बढ़कर के कान में यह कह देंगे कि मां मेरा आज्ञा चक्र पकड़ा हुआ है। फूल लेकर चले आए और कान में कह दिया, मेरा आज्ञा चक्र पकड़ा हुआ है, उसे ठीक कर दीजिए। अरे भई क्यों पकड़ा हुआ है, कैसे हुआ। कुछ उस पर study (अध्ययन) नहीं। मैं तो नहीं—मेरे पास time (समय) नहीं।"

एक छोटी सी चीज है कि ध्यान के बाद, आप थोड़ी देर अपने पैर पानी में रखें और अपने vibrations पायें। जो कुछ खराब है, उनको निकाल दें। सफाई जैसे हो जाये। जैसे आप नहाते हैं, इस तरह से रोज आप नहाईये। हम लोग अगर कोई एक दिन आदमी न नहाये तो सोचते हैं, बड़े ही गन्दे लोग हैं, नहाते नहीं। हिन्दुस्तानियों का तो यह हाल है कि उनको कोई कह दे कि नहीं नहायेंगे तो जैसे उनको तो जेल हो जाये। लंदन में अगर आप सवेरे नहायें और इसके बाद बाहर निकल जायें तो आप को बहुत बीमारियाँ हो सकती है। खास करके

कैंसर हो जाता है Lungs (फेफड़ों) का। और मैंने इतने हिन्दुस्तानियों से कहा तो उन्होंने छोड़ दिया सहजयोग और फिर कैंसर से मर गए।

लेकिन अगर उनसे कहा जाये कि हमारी आत्मा का भी स्नान होना चाहिए, हमारा जो भी आत्म-जीवन है, उसका भी स्नान होना चाहिए, उधर किसी का चित्त नहीं रहता, उसकी महानता, उस की गम्भीरता में।

इसलिए, जो कि आपने एक किस्सा सुना होगा। एक इम्तहान में ज्यादातर Mathematics (गणित) में सवाल आते थे जो मुझे अब समझ में आ रहे हैं। तब तो समझ में नहीं आते थे। जैसे कहते थे कि एक A आया, उसने काम किया $\frac{1}{4}$वां दूसरा आया उसने $\frac{1}{16}$वां किया, फिर तीसरा आया उसने इतना किया, फिर चले गए, काम कब खत्म होगा ? होगा ही नहीं, जब इतने भगोड़ों को आप लगाइगा। .....लेकिन मेरी नसीब में भी ऐसे बहुत आए हैं। मेरी यह समझ में नहीं आया कि सहजयोग का काम पूरा क्यों नहीं हो रहा है। होगा कैसे, जब भगोड़ों से पाला पड़ा है तो होगा कैसे ?

जब जमने वाले ढूंढे जायें, जो जमें। हम देने को तैयार हैं, सब शक्ति देने को तैयार हैं, सब बताने को तैयार हैं, तब हो ठीक मामला। लेकिन जमने वाला ही मुश्किल है, ऐसे सवालात जहां पूछे जाते हैं। यही समझ लीजिये कि हमारे हित में जो है, उसे गम्भीरता से पकड़ना है। जिसको पकड़ना चाहिए उसको नहीं पकड़ा। पहले तो समझ में आता नहीं था कि कोई चीज़ ऐसी है ही नहीं पकड़ने लायक कि जिसको पकड़ा जाये।

लेकिन जो चीज जीवन के लिए सबसे महत्व-पूर्ण है जो आपको समर्थ बनाती है याने आपके अर्थ के बराबर आपको बना देती है। जिसके बगैर आपका जीवन पूरी तरह से व्यर्थ और निरर्थक है, उस चीज को भी नहीं पकड़ते हैं तो मैंने कहा कमाल हो गया, बिल्कुल बेकार लोग हैं।

इतनी ज्यादा समस्या है, इतना उथलापन है और एक तरह से कोई भी चीज का महत्व नहीं करते, हर चीज का मजाक, मजाक बना लेना। अपना भी तो मजाक बन रहा है। जो आप सोचते हैं कि सबका मजाक बना रहे हैं, आपका भी मजाक बन रहा है और अपने को भी ऐसी गड़बड़ में आप फंसा रहे हैं कि उससे निकलना बहुत मुश्किल है। बहुत ही मुश्किल है।

सहजयोग ऐसी चीज है जो आपको पाना है। यहां देने का कुछ नहीं सिर्फ पानेका है। लेकिन लोगों को यह समझ में नहीं आता कि अगर कोई देता है तो उसका महात्म समझाना चाहिए। हाँ, अगर मैं आपसे कहूँ कि साहब कल से आप यहां आयेंगे तो सौ रुपये का टिकट लगायेंगे तो देखिये यह सब भर जाएगा। यहां बड़ी पेटी लगाइये "सेवा के लिए"—लम्बी पेटी तो भर जायेगी और लोग बढ़ जायेंगे। यहां आयेंगे तो मैं कहूँगी कि कुछ नहीं, आपको नाम दूंगी—कहेंगे, "वाह ! हमें तो नाम मिल गया—नाम मिल गया।" अगर आप किसी को बेवकूफ बनायेंगे तो लाखों मिल जाएंगे। ग़ालिब ने कहा था, "बेवकूफों की कमी नहीं, ग़ालिब बिन ढूंढे हज़ार मिलते हैं।" उधार मिलते हैं, यह हालत है और अगर आप देखिये जो गुरू लोग हैं, जो रुपया पैसा ले रहे हैं और जो आज बढ़े हुए हैं, उन्होंने कैसी-कैसी बेवकूफियाँ फैलाई हैं और उन बेवकूफियों में कैसे लोग आ रहे हैं। एक गुरू सा० यहां दिल्ली आये थे तो सारी दिल्ली बन्द हो गई थी। लोग पागल हो गए थे। अब उन के बारे में किताबों में निकल रहा है, अखबारों में निकल रहा है, ये निकल रहा है, वो निकल रहा है, अब धीरे धीरे उनका सब निकल रहा है। लेकिन ये जमाना था कि दिल्ली में रात को कोई चल फिर नहीं सकता था, ऐसे थे ये गुरू महाराज। अजीब अजीब तमाशे हैं, मैं आपको क्या बताऊँ।

मेरे जैसे अजनबी के लिए तो यह है कि इनको कैसे बताया जाय इसका महात्म। इतना महान् है ये, चीज बहुत भारी है। जैसे कि किसी इन्सान ने कभी हीरा देखा नहीं, उसकी कीमत कभी आँकी नहीं, ऐसे बिल्कुल देहाती लोगों को (नहीं देहाती तो बहुत समझदार होते हैं, मैं किस को कहूँ) उनके पास आप ले जाकर उसे दिखायें। समझ लीजिए कि उरंग-उटान है, उसके सामने आप हीरा रख दीजिए। वो एक चपेड़ मारेगा कि आप देखते ही रह जाइये। उसी तरह की हालत कभी कभी हो जाती है।

यही हीरा ही नहीं यही पाने का है, यही सब कुछ है, इसी को पाइये, यही कुछ लेने का है और कुछ भी नहीं है। यह बात जरूर है कि जो मैं बातें कहती हूँ, हो सकता है ६० फीसदी बातें किताबों में नहीं मिलतीं। उसका आपको साक्षात्कार करना है। आपको आत्म-साक्षात्कार करना है। उसको लेकर के कोई साहब झगड़ा खड़ा कर दिया। कहने लगे कि आपने कहा कि यह बुद्ध का स्थान है, यह महावीर का है, यह हम कैसे जानेंगे? मैंने कहा, है या नहीं आप जान जायेंगे, पहले आप पार हो जाइये। अगर आप जान नहीं सकते तो यह आपका दुर्भाग्य है। ये तो मुझसे ऐसे पूछते हैं कि जैसे मैं पार्लियामेंट की मेम्बर ही हूँ। मैंने कहा कि जो मैं कह रही हूँ उसकी सत्यता मैं आपको तब दूँगी जब आप इसके काबिल हो जायेंगे। पहले आप पा लीजिये। जहां बुद्ध और महावीर हैं, वो है या नहीं ये देखने की पहले आँख तो आपके अन्दर आ जायें। पहले ही क्या मुझसे सवाल पूँछ रहे हैं? क्या आप University (विश्व-विद्यालय) में जाकर Vice Chancellor (उप-कुलपति) साहब से पहले ही पूछते हैं कि क्या कार्बन डाई ऑक्साइड में कार्बन व ऑक्सीजन है, साबित कीजिए। वह कहेंगे, आप चलिए, आप का Admission (दाखिला) खारिज।

यह सीखने की जगह है, यह जानने की जगह है, यह पाने की जगह है, यहां नम्रता पूर्वक आया जाता है। सब लोग पाते हैं और गहरे उतरते हैं। और समझते हैं और तभी वो पनप कर बड़े हो सकते हैं जबकि वह उसको पायें। इस चीज को हम रोज-मर्रा के जीवन में किस तरह, किस तरह समझते हैं? गंगाजी बह रही है आप अपनी गगरी ले जाइये। गंगाजी, जितनी बड़ी गगरी होगी, उतना ही उसमें पानी भर देंगी। उस वक्त क्या आप जाकर गंगाजी से प्रश्न पूछते हैं? उसी प्रकार यह गंगा बह रही है, समय आ गया है, वक्त आ गया है इस वक्त आपका साक्षात्कार होने का समय है। और इस देश में यह बहुत जोरों में है। शहरों में जरा देर से होता है पर गाँवों में बहुत जोरों में हो रहा है। बहुत जोरों में।

हम अभी एक गाँव में गए थे। वहां ६,००० लोग आये थे, ६,००० लोग। और वहां हम खड़े हो गए, तो कोई हमारे सामने कोई वहां ऐसा बहुत सुन्दर कुछ (हॉल) नहीं था। कुछ मन्दिर पर चढ़े थे, कुछ इधर उधर खड़े थे और सारे के सारे पार हो गए और जम गए वो। और वहां Centre (सहजयोग केन्द्र) भी बन गया और चलने लगी बात आगे।

कहीं ऐसा न हो जाये कि सारे बाहर जो हैं वो भगवान की छलनी में से छन कर नीचे गिर जायें और बाकी लोग रह जायें। इसलिए अपने अपने अस्तित्व को, अपने, अपने गरिमापन को पाइये। उसको जानिये और उसमें समाइये। यह समझने की बात है। आज थोड़ा सा Introduction (परिचय) आपको बताया है, कल मैं इसको विशेष रूप से और पूरी तरह से समझाकर आपको बताऊँगी। ०००

—अनुसरणीय—

१. श्री माता जी या उनके फोटो की ओर कभी भी सामूहिक ध्यान या पूजा के समय अपनी पीठ नहीं करनी चाहिए।

२. केन्द्र पर सामूहिक ध्यान के समय केवल एक व्यक्ति द्वारा ही फोटो पर कुमकुम लगाना चाहिए।

३. पूजा या ध्यान के पूर्व माता जी के फोटो को कुमकुम लगाने के बाद ऊंगली में बचा कुमकुम अपने लिए प्रयोग नहीं करना चाहिए। हाथ साफ करके अपने लिए कुमकुम का इस्तेमाल करना चाहिए।

४. श्री माता जी का, आगमन पर स्वागत करते समय तथा विदा करते समय, एक दो सहजयोगियों को ही केन्द्र के प्रतिनिधि स्वरूप माला पहनानी चाहिए। शेष लोगों को अपनी जगह से ही हाथ जोड़ना चाहिए। किसी को उस समय पैर पर भी नहीं जाना चाहिए।

५. सहजयोग के सन्देश को हर मानव तक पहुंचाना प्रत्येक सहजयोगी का पुनीत कर्तव्य है।

त्यौहार

१७ अक्टूबर	—	नवरात्रि पूजा
२७ अक्टूबर	—	दशहरा
१ नवम्बर	—	गुरुनानक जन्मदिन
१५ नवम्बर	—	दीपावली
३० नवम्बर	—	पूर्णमासी
२५ दिसम्बर	—	क्रिसमस
२६ दिसम्बर	—	श्री दत्तात्रेय जन्मदिन

आन्तरिक ज्ञान

आज हम सब यहां अपनी आत्मा के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करने के लिए एकत्र हुए हैं। आत्मा के सम्बन्ध में ज्ञानार्जन, पुस्तकों के माध्यम से अथवा तत्सम्बन्धी तथा कथित सुयोग्य ज्ञानी के माध्यम से प्राप्त होता है। यह हमारे मस्तिष्क में किस अंश तक जाता है जिसको हम केवल अपने मस्तिष्क की समझ-बूझ से ही समझ सकते हैं। ये मस्तिष्कीय ज्ञान हमें युक्ति-संगत कथन (Rationality) एवं मेधा (intellect) द्वारा हम तक पहुँचता है जो स्वयं में सीमित है। यह हृदय को स्पर्श नहीं करता है। मस्तिष्कीय होने से शब्द जाल में फंसकर रह जाता है। हृदय पटल पर अंकित न होने से वाह्य ज्ञान अव्यवहारिक रूप से आंशिक ही रह जाता है।

अतः हम दूसरे विवेक में पदार्पण करते हैं परंतु यह भी सीमा-बद्ध है। अर्थात् यदि मैं आपसे कहूँ कि एक आत्मा है जो आपके अन्दर अन्तराल में निवास करती है और हमारे अन्दर एक महान शक्ति विद्यमान है जो सदैव इस उचित अवसर की प्रतीक्षा में है कि कब आपको आपका पुनर्जन्म प्रदान करे? वह मैं आपको बताती हूँ कि इसको आप केवल बौद्धिक रूप से ही समझ पायेंगे। यह सब तो अब तक काफी कहा जा चुका है, इसमें नयापन क्या है? अधिक से अधिक मैं इसको आधुनिक फैशन में ढाल दूँगा जो आपको और अधिक मानसिक शक्ति प्रदान कर देगा जिससे आप चक्कर पे चक्कर काटते रहेंगे फिर थक कर बैठ जायेंगे, विश्लेषण करेंगे और कहीं भी (किसी निर्णय पर) न पहुँच पायेंगे।

मैं कहती हूँ कि एक शक्ति है जिसको हम कुण्डलिनी के नाम से पुकारते हैं और वह हमारे सब के अन्दर विराजमान है। ऐसा कथन बहुत से लोगों का है। क्योंकि यह बात लम्बे समय पहले लिखित है, हजारों वर्ष पूर्व लिखी गई है। क्राइस्ट ने भी कहा है कि आपका पुनर्जन्म होगा और आपका संस्कार (Baptised) भी किया जायेगा। यह कार्य किसी आध्यात्मिक विद्यालय द्वारा संपन्न नहीं होगा वरन जॉन जैसे संस्कारी व्यक्ति द्वारा जो उस पवित्रतम द्वारा अधिकार पाये होगा। यह शक्ति आपके अन्दर शिथिल सुप्त अवस्था में पड़ी है। भिन्न-२ प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति इसके सम्बन्ध में लिखता है। इस सम्बन्ध में बहुत कम संख्या में मतैक्य रखते हैं। यह एक और भ्रांति है जिसका जिज्ञासु को सामना करना पड़ता है वह यह कि एक शक्ति हमारे अन्दर सोई पड़ी है और कुछ कहते हैं कि यह आपको विद्युत आवेग (electric shock) अर्थात् झटका देती है। कुछ का कथन है कि यह मेंढ़क की तरह से उछल कूद कराती है। कुछ का कहना है कि यह वायु में उड़ना आरम्भ करा देती है। साधकों में इस प्रकार की भ्रान्तियां प्रचलित हैं। ऐसी भ्रान्ति जब कि आप साधनरत हैं, खोज कर रहे हैं, बहुत काल से आप इसकी खोज में लगे हैं। आप सच्चे साधक भी हैं फिर भी जब आप इसकी साधना में लगे हैं नहीं जानते कि जाना कहां है, लक्ष्य क्या है। अब क्या आशा करें? आप समस्याओं में कूद पड़ते हैं, जूझने लगते हैं।

अभी पिछले दिनों जब मैं स्विटजरलैण्ड गई तो मेरे एक बच्चे ने जिसने प्रोग्राम का अच्छा प्रबन्ध किया था कहा कि माताजी यहां के निवासी भारतीय गुरुओं के विषय में सन्देहास्पद दृष्टि रखते हैं। मुझे यह सुन अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हुआ। वास्तव में बहुत प्रसन्न हुई कि यहां के लोगों ने इस सम्बन्ध में कुछ सोच विचार तो आरम्भ किया क्योंकि उनको भ्रम से धोखे में डाला जा रहा है। अब

*परम पूज्यनीय माताजी श्री निर्मला देवी जी द्वारा ११ जून १९८० को अंग्रेजी में किन्गस्टन में दिये गये प्रवचन का हिन्दी रूपान्तर।

वे पूर्णतः भ्रमित हैं। वे इस बात में विश्वास करना असम्भव समझते हैं कि कोई भी ईश्वर के बारे में वार्तालाप कर सकता है। अतः मेरे प्रवास के समय में सबसे पहिला प्रकरण जो उन्होंने वादविवाद के लिए प्रस्तुत किया वह था "Demystification of Gurus" "गुरुओं के पाखण्ड का रहस्योद्घाटन"। यह काफी ललकारने वाला (challenging topic) प्रकरण प्रस्तुत किया गया था। परन्तु यही मैंने १९७० में भारतवर्ष में और १९७३ में अमेरिका में कहा—परन्तु वहां किसी ने भी मेरे इस तथ्योद्घाटन को पसन्द नहीं किया और दोष दिया कि मैं इस प्रकार आलोचना-प्रत्यालोचना करती हूँ।

मिथ्या मिथ्या है, वास्तविकता वास्तविकता है। अब आप जान पायेंगे उन लोगों से, जो यहां पर विद्यमान हैं। वे आपको बतायेंगे कि किस प्रकार उन्हें भ्रम में डाल कर ठगा गया, किस प्रकार उन्हें धन सम्पति से वंचित किया गया और धोखा किया गया। इन सब (ठग विद्याओं को) को आप अब भलो भांति नहीं समझ सकते हैं क्योंकि आप अब इनकी परिधि से बाहर आ चुके हैं। (You are seeking beyond money) आप बिना धन सम्पत्ति गंवाये खोज कर पा रहे हैं। आप इस तथ्य से भलीभांति परिचित हैं कि धन सम्पत्ति भी आप को सुखी और प्रफुल्ल नहीं कर सकती। परन्तु जो लोग अभी भी इस तथ्य से अनभिज्ञ हैं, वे उसके सदृश हैं जो शिखर पर तो चढ़ रहे हैं परन्तु नीचे (खड्ड) को नहीं देखते हैं। ऐसे व्यक्ति ऊपर उठने का प्रयत्न करते हैं और कुछ अनर्गल बातें करने के अभ्यस्त हैं। आपका धन हरण करते हैं। मैं स्वयं अनुभव करती हूँ कि यह लज्जास्पद विषय है।

परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि सत्य (Reality) है ही नहीं। यदि सत्य नहीं है तो हम उसकी प्रतिलिपियां कैसे रख सकते हैं। यदि पुष्पों का अस्तित्व ही नहीं है तो हम प्लास्टिक के पुष्प कैसे बना पायेंगे। यदि आपके संसर्ग में ऐसा कोई पाखण्डी आये तो आपको यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि आपको सत्य की ही खोज करनी है और जब आप सत्य की खोज में तत्पर हैं तो आपको यह भी विदित होना चाहिए कि आपको केवल सत्य की ही खोज करनी है और सतर्क एवं सजग रहना है कि आप सत्य के अतिरिक्त और कुछ ग्रहण नहीं करेंगे। परन्तु सावधान रहें, आपको सम्मोहित भी किया जा सकता है। आपका मस्तिष्क शोधन भी सम्भव है। क्योंकि आप ये सब बातें नहीं जानते हैं। यदि कोई आपके सामने कुछ शब्द संस्कृत भाषा के उच्चारण कर दे तो आप उसके आकर्षण में ऐसे फँस जाते हैं कि बस पूछिये मत। जैसे संस्कृत शब्द अलभ्य वस्तु है। यथा शिष्यों में से कुछ साधक जो "गुरु" के पास गए थे उन्होंने उनसे मंत्र दीक्षा ली। यदि आप उस मंत्र को किसी भारतीय को बतायें तो वह यह मंत्र सुनकर हंसी के कारण उसके पेट में बल पड़ जायेंगे। वह मंत्र "आइन्गा" है कोई भी भारतीय यह सुनकर हँसे बिना न रहेगा। परन्तु इस मंत्र को प्राप्त करने के लिए लोगों ने तीन सौ पाउन्ड व्यय किये हैं जो निरर्थक है। यह मंत्र है ही नहीं। फिर आप मंत्र ग्रहण हेतु पाखण्डी गुरुओं के पास जाते ही क्यों हैं? मंत्र का भरा पूरा विज्ञान है पर हम उसकी गहराई तक पहुँचने का श्रम नहीं कर सकते, आप उस पर उछल कर कूद पड़ते हैं। क्योंकि वे ऐसा ही चाहते हैं। साधारण सी बात है उनको धन की आवश्यकता है और आप को अपनी इच्छा पूर्ति की ललचाहट है। यह एक साहसिक कार्य का उद्योग (enterprise) है।

आपने इस खोज के लिए अपनी प्रत्येक वस्तु को न्योछावर कर दिया है। आपने देख लिया है कि ये सांसारिक भौतिक पदार्थ आपको कहीं भी (आध्यात्मिकता के उच्चतम शिखर तक) नहीं ले जा सकते। आपने बाह्यता पर भी दृष्टिपात किया है। आपकी मूल्यांकन प्रणाली भिन्न है यदि किसी ऐसे आदमी की मूल्यांकन विधि आपसे भिन्न है तो

वे आपका शोषण (exploitation) करेंगे। अतः प्राकृतिक प्रतिक्रिया होती है। मैं इसे भली प्रकार समझ सकती हूँ। ऐसा होना भी चाहिए।

परन्तु वास्तव में सत्य की सत्ता है और यह आपके भीतर स्थित है। और आपके अन्दर आत्मा भी विद्यमान है और एक बार जब आपने उसे पा लिया तो आपने उस अनित्य सनातन को भी पा लिया। यदि मैं आपसे आग्रह करूं कि आप अत्यंत शान्त एवं स्थिर निर्मल मन बनिये तो यह एक अशिष्टता होगी। यदि मैं आपसे अनुरोध करूं कि आप अपनी इच्छाओं पर, भोगों पर (इन्द्रियों के विषय वासना जनित) विजय प्राप्त करें जिससे कोई आप पर नाजायज प्रभाव (Dominate) न डाल सके तो यह आपके लिए एक महज व्याख्यान के सदृश सिद्ध होगा। इसका तो कोई अर्थ ही नहीं रह जाता।

इन वस्तुओं को (लोभ, मोह, अहंकार आदि vices) आपने स्वयं ही कस कर पकड़ रखा है तो आप इनका परित्याग कैसे करेंगे क्योंकि आपकी पकड़ इन पर बड़ी जबरदस्त है। आपको किसी अन्य वस्तु को अपनी पकड़ में लाना है। यह एक अत्यंत साधारण सी बात है। यदि आप इससे कहीं अधिक मूल्यवान वस्तु पा जाते हैं जो इन सबसे अधिक शक्तिमान (Dynamic) हो, इनसे अधिक आह्लादकारी हो जो आपके अन्दर सुरक्षा की भावना को स्थिरता प्रदान करे तो यह सब व्यर्थ की वस्तुएं स्वतः ही निरस्त होकर लोप हो जायेंगी।

अब आप स्वयं ही देखिये यह किस भांति क्रियाशील होती है। एक भद्र पुरुष एक महाभयंकर गुरु के पास होकर मेरे सान्निध्य में आये। उस तथा कथित गुरु ने उन्हें घोर यातना देकर नष्ट-प्रायः कर दिया था। वहां वह केवल प्रस्तावित (introductory) लेक्चर ही दिया करता था तथा उसने बताया कि माताजी जहां आप भाषण दिया करती थीं उसी हाल में से (३००) तीन सौ के लगभग व्यक्तियों को प्रस्तावित लेक्चर के लिए जमाकर लेता था। अब ऐसे अद्भुत पुरुषों का क्या कीजिये। क्या यह विचित्र बात नहीं है। यह वहां का एक सुप्रसिद्ध व्यक्ति है। वह आपसे धन लेता है और आपको कोर्सेज (courses) दे देगा। उसने बहुत से लोगों का सत्यानाश कर दिया है। यह कुछ इस प्रकार से है जैसा मैं देखती (watch) रहती हूँ। कि लोग शराबखाना (pub) में जाते हैं और मदोन्मत्त होकर बाहर निकलते हैं। उनकी देखा देखी और लोग भी आकर्षित होकर अधिक मात्रा में उन्मत्त होने के लिए प्रवेश करते हैं। कभी कभी मानव स्वभाव को परखना भी असंभव प्रतीत होता है। और जब कि वास्तविकता आपके सन्मुख खड़ी है फिर भी आप सत्य का गला घोंट देते हैं। इन सब की व्याख्या आप किस ढंग से करेंगे। सत्य की मान्यतायें आपकी गरिमा है, क्या आप सत्य में कुछ और योग करना चाहते हैं; कल्पना करो कि मैं एक हीरों का हार पहनती हूँ। यह मुझे आभूषित कर शोभा बढ़ायेगा, नेकलेस की नहीं। वह तो अरब खरब गुना अधिक देदीप्यमान है इन सब पदार्थों से जो हमें सुसज्जित कर शोभा बढ़ाते हैं। यदि आप इस धारणा को मान्यता देंगे तो आपकी गरिमा, वैभव की वृद्धि होगी और आप गौरवशाली और ऐश्वर्यवान होंगे। क्या यह वस्तुतः ऐसा नहीं है? इस सम्बन्ध में विचार करें। आपका मोह इनके बाह्य आडम्बरों की ओर अधिक है जिनके धोखा-धड़ी से परिपूर्ण, चतुरता, मक्कारी, एय्यारी के कार्यकलापों से आप सम्मोहित हो जाते हैं। यही इसकी एकमात्र व्याख्या है। इसी भांति से उन्होंने इसका प्रबन्ध कर रखा है। यह सम्मोहन (Hypnosis) एक के बाद एक अग्नि की भांति फैलता है। आप उनसे पूछिये कि आपको इनसे क्या उपलब्धि हुई। उनका उत्तर होगा "बस कुछ न पूछिये हमारे क्या कहने हैं, हम तो परमानन्द में हैं। तीन दिन के पश्चात ही आप पायेंगे कि उस व्यक्ति ने आत्महत्या जैसा जघन्य पाप किया है।

हम अभी भी इसके प्रति सजग नहीं हैं कि यह एक अति महत्वपूर्ण है। मानव इतिहास में यह एक बहुत महत्वपूर्ण समय है।

अन्तिम निर्णय बेला आ पहुँची है। आज हम उस अन्तिम निर्णय के सम्मुख प्रस्तुत हैं। हम इसके प्रति सजग नहीं हैं। हमें इसका आभास भी नहीं मिल रहा सब आसुरी शक्तियां आन पहुँची हैं। भेड़ की खाल का आवरण डाल कर भेड़िये आखेट हेतु आ प्रस्तुत हैं। वे आपको आकर्षित करने का प्रयास कर रहे हैं। आप इसका निर्णय नहीं ले पा रहे हैं। कृपया आप बैठिये, पधारिये और सत्य के निर्णय का प्रयत्न करें। यह एक तथ्य है कि यह आरम्भ हो चुका है, निःसन्देह प्रारम्भ हो चुका है।

अब हमें ईश्वर के दृष्टिकोण से देखने दो कि वह किस प्रकार से आपको judge (निर्णीत) करता है। यह कथन कि हम ईश्वर में विश्वास नहीं रखते बहुत आसान है। इससे भी अधिक सहज है कि हम सरकारी सत्ता में आस्था नहीं रखते। परन्तु जब आप कानून के विरुद्ध कोई कार्य करें तो आपको विदित हो जायेगा कि सरकारी सत्ता का प्रभुत्व है या नहीं। इसी प्रकार यह कहना अत्यन्त सरल है कि हम ईश्वर में विश्वास नहीं करते। वह इतना महान, कृपालु, इतना प्रेममय और इतना मेहरबान है कि उसने हमें स्वयं को जानने की हमारी स्वतंत्रता प्रदान की है। हम उसमें आस्था रखते हैं। हम उसमें निष्ठा लाते हैं। उसने ही हमें अमीबा से (Amoeba) से इस स्टेज तक मानव प्राणी के रूप में विकसित किया है। उसने ही हमारे चारों ओर ऐसी सुन्दरतम विश्व की रचना कर प्रसार किया है। हम उसको मान्यता देते हैं कि यह सब उसी की रचना है। परन्तु एक निर्णय (judgement) है जिसका सामना हमें अब करना है और वह ईश्वर से ही आ रहा है। यह वह मार्ग नहीं जिसे हम समझ बैठे हैं कि वह एक मजिस्ट्रेट की भांति बैठकर और एक-एक करके बुला भेजेगा कि आइये पधारिये और एक वकील भी आपको वहां पर बैठा मिलेगा।

परन्तु उसने यह सब व्यवस्था रहस्यमय ढंग से आपके ही भीतर इस न्यायिक शक्ति (judging force) को पधरा दिया है। उत्क्रांति में इसे देखिये यह किस प्रकार क्रियाशील है। उत्क्रांति में किस सुन्दरता के साथ हल किया है, अर्थात अत्यंत सुन्दरता के साथ इस रचना कार्य का सम्पादन किया है कि हम अमीबा से इस स्टेज तक कैसे आये। बहुत से पशुओं को उपेक्षित किया गया तथा कुछ पशुओं की रक्षा की। भारी भरकम पशुओं की जाति में से उसने हाथी की रक्षा की। उन्होंने बहुतों की रक्षा की और एक-एक करके बहुतों को इन वर्षों में बिसार दिया। मानव जाति के प्राणियों में भी जो अति से अधिक पीड़ित थे उपेक्षित किये गए। आप इतिहास तो उठाकर देखिये। इन दिनों आप किसी को भी अपनी सात पत्नियों का वध करते हुए न देख पायेंगे। मेरा मंतव्य है आप ऐसा नहीं कर सकते—यह असंभव है। हिटलर जैसे (अत्याचारी) आये और विनष्ट हो गये। जो भी कोई अतिक्रान्त निर्दयात्मक प्रभुत्व की सत्ता के अहं के विचार के साथ आया विनष्ट हो गया। वे विचार मृत प्रायः हो जाते हैं। लोग उनके कार्य कलाप एवं विचारों के कारण अपने को लज्जित हुआ अनुभव करते हैं। मानव प्राणियों में नूतन विचारों का अभ्युदय होता है। समतौलन, धीरजता और शान्ति को प्रश्रय मिलता है।

हम इसके विषय में वार्तालाप कर रहे हैं। लोग शान्ति के सम्बन्ध में वार्ता करते हैं। परन्तु क्या वास्तव में, हम अपने अन्दर शान्ति स्थापित करने के इच्छुक हैं तो हम इस दिशा में क्या यत्न प्रयत्न कर रहे हैं? वास्तव में निर्णय (judgement) का आरम्भ हो चुका है और आपका निरीक्षण (judge) करने के लिए ईश्वर ने आपके भीतर सब के सब न्यायाधीशों को बिठा दिया है। क्राइस्ट ने कहा था "जो मेरे विरुद्ध नहीं हैं वे मेरे साथ हैं।" ये न्यायाधीश हैं। ये मजिट्रेट आपके

भीतर, विभिन्न केन्द्रों में आपकी रीढ़ की हड्डी (spinal chord) में और आपके मस्तिष्क में स्थित हो गये हैं।

यह एक अत्यंत रोचक प्रसंग है ये seats पैनल (Panel) की तरह आपके मस्तिष्क में बैठी हैं और जब कुण्डलिनी का प्रकाश इन केन्द्रों के माध्यम से ऊपर की ओर चढ़ता है तो आपके अन्दर के समस्त केन्द्र प्रकाशित हो उठते हैं। आप की उंगलियों के अन्दर इस प्रबोधन संस्कार (enlightenment) का प्राकट्य होता है। आपकी उंगलियों के छोर भी प्रकाशमान हो जाते हैं। उंगलियों का सूक्ष्म गुणग्राही गुण (sensivity) आपको बता देगा कि कौन-सा केन्द्र, आपके भीतर, बाधाग्रस्त है (और सुचारु रूप से काम नहीं कर रहा) यह कुण्डलिनी ऊर्ध्वगामी होती है और कपाल क्षेत्र के उस विन्दु (point) तक पहुँच जाती है जिसे तालू कहा जाता है यह एक मुलायम हड्डी जो आपकी शैशवावस्था से यहां है—का भेदन करती है। वास्तव में यह इस हड्डी को तोड़ देती है। इसको आप किसी भी व्यक्ति विशेष के अन्दर देख सकते हैं जिसके इस स्थान पर बाल न हों— इस स्थान का कुछ सूक्ष्म सा अंश नीचे की ओर धंसा हुआ सा दिखाई देता है। प्रथम तो इसका स्फुरण होता है। आप इस कुण्डलिनी का स्फुरण त्रिकोणाकार अस्थि में जिसे (sacrum) कहा जाता है देख सकते हैं। जब यह कुण्डलिनी ऊपर को उठती है तो आप इसकी गति का भी निरीक्षण कर सकते हैं। यह सब में नहीं देखा जा सकता किसी किसी में हो। क्योंकि जब व्यक्ति उच्च कोटि का हो अथवा आप यों कह सकते हैं कि यदि वायुयान उच्च कोटि का है तो उसका उतार (landing) भी उच्चकोटि का होगा और उसका (उड़ान) आकाश गमन (shooting off) उच्च श्रेणी का होगा। ऐसे किसी व्यक्ति में जिसके अन्दर कोई बाधा नहीं है उसमें भी कुण्डलिनी का उत्थान प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा जा सकता है। उदाहरणार्थ जब मैं यहां प्रोग्राम में भाग लेने आई तो उस समय आवागमन (Traffic) की कोई समस्या न थी सो हम बिना किसी बिघ्न बाधा के smoothly यहां पहुँच गए किसी ने भी हमको नोटिस नहीं किया। परन्तु यदि ट्रैफिक की समस्या सामने आ गई तो इधर उधर गत्यावरोध उत्पन्न हो जायेगा। इसी प्रकार जब किसी एक व्यक्ति में कुण्डलिनी के उत्थान की प्रक्रिया आरम्भ होती है तो उसके चक्रों में स्थित समस्त बाधाओं को समस्याओं को प्रदर्शित कर देती है जिसको नंगी आंखों से देखा भी जा सकता है।

यही कुण्डलिनी जागरण विधि है। यह ऐसा नहीं है जैसा लोग कहते हैं कि मेंढक की तरह उछल कूद प्रारम्भ हो जाती है। अब आपको अपने मस्तिष्क का प्रयोग करना है। आधुनिक युग में मस्तिष्क का स्वस्थ रहना अत्यावश्यक है। क्या हमें मानव प्राणी बनने के पश्चात भी मेंढक बनने की आवश्यकता है। क्या हमें मानव तन धारण करके भी पक्षी बनना है ? आपका विज्ञान यथा स्वयं मनोविज्ञान (Psychology) मेरा मत है उनमें से बहुतसों को विश्वास है कि सामूहिक चेतना की उपलब्धि के पश्चात हमको अचेतना में कूदना पड़ता है। इन लोगों ने यह बात बहुत स्पष्टता के साथ कही है। तब हमें इस प्रकार की कुछ और आशा करनी चाहिए जिससे हम अपनी सामूहिक चेतना में कूद सकें। यह वैसा नहीं है कि मैं कह रही हूँ या कोई और कह रहा है परन्तु यह घटना आपके अन्दर घटती अवश्य है।

अभी कुछ दिन व्यतीत हुए जब मैं Hamstead में थी। मैं जानती हूँ वहां कुछेक के साथ क्या हुआ। कुछ साधकों को उनकी vibrations की प्राप्ति नहीं हुई परन्तु उन्हें अपने हाथों में शीतल बयार का अनुभव हो गया जब कि कुछ को नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि हमने पा लिया है और विलुप्त हो गए। यह अपने स्वयं से व्यवहार करने

का सही ढंग नहीं है। आपको अपने आपसे प्रेम करना है और अपनी खोज की उपलब्धि का सम्मान करना है। आपको अपनी इच्छा पूर्ति करनी है। एक मां के नाते मैं आपको बताती हूँ कि यह एक महत्वपूर्ण मामला है। गुरुपने की दुकान यहां पर नहीं बुलाई जा रही है। आपको Realisation पाना है अर्थात् आपको पार होना है। आपको पाना पड़ेगा। यह इतना सौभाग्यशाली है कि आपके जीवन काल में ही समय आ उपस्थित हुआ है कि आप इसे पा सकते हैं। यही कारण है कि आपने इस उपयुक्त समय में जन्म धारण किया है। जैसा कि मैंने आपसे कहा है कि आप जन्म जन्मान्तरों से सत्य की खोज करने वाले (seekers) रहे हैं। अतः आप इसे पाइये और इस जीवन को सार्थक बनाइये।

हमारे भारतीय धर्म शास्त्रों में एक उपाख्यान लिखा मिलता है जिसका नाम नल-आख्यान है। जब राजा नल कलियुग द्वारा बुरी तरह पीड़ित किया गया तो उसने कलियुग को पकड़ लिया और उसका अस्तित्व ही समाप्त करने वाले थे। ऐसा कहा जाता है कि अब कलियुग का राज्य है और वह सब प्राणधारियों के मनों को व्यग्र कर देता है उसने राजा नल को भी व्यग्र किया था और उसका उस की पत्नी (दमयन्ती) से विछोह करा दिया। अतः राजा नल ने कलियुग को बन्धन में बांध लिया और कहा कि मैं सदैव के लिए ही आपका अस्तित्व समाप्त कर दूंगा जिससे फिर भविष्य में आप प्रजा को व्यग्र (confuse) न कर सकें। कलि ने उत्तर दिया कि निस्सन्देह आप मेरा बध कर सकते हैं। मुझे स्वीकार है परन्तु आप मेरे महत्व (importance) को जानिये। मेरा भी महातम्य अवश्य है। नल राजा ने पूछा कि आपका क्या महात्म्य (importance) हो सकता है? उसने उत्तर दिया कि जब मेरा राज्य होगा जैसा कि आधुनिक समय में हो रहा है। राज्य करने का अर्थ है जनता के मन में भ्रम पैदा करना प्रत्येक वस्तु से हमारा (कलिका) सम्बन्ध जुड़ गया है। हम इस प्रकार की बातें करते हैं यथा यह बिल्कुल ठीक हो सकता है, और यह बिल्कुल सही भी नहीं हो सकता है। यह अच्छा है यह अच्छा नहीं है। यह वह समय है जब व्यग्रता (Confusion) का राज्य इस धरा पर है यह आधुनिक समय ही कलियुग है। इसी समय, बड़े-बड़े सन्त पुरुष, सन्यासी, साधु, साधक तथा महान विभूतियां जो गुप्त रूप से ईश्वर प्राप्ति के लिए तपस्यारत थे और पर्वतीय गुफाओं में, निर्जन वन कन्दराओं में निवास करके साधना करते थे। वे सब इस धरती पर वापस लौट आयेंगे और साधारण गृहस्थ मानव के रूप में जन्म लेकर सत्य को पायेंगे। इसी व्यग्रता के माध्यम से उन्हें सत्य का दर्शन प्राप्त होगा और वे स्वयं सत्य में एकाकार हो जायेंगे। उन्हें ही आत्म साक्षात्कार (self-realisation) की उपलब्धि होगी। इस प्रकार राजा नल ने प्रतिशोध की भावना को त्याग दिया और अपने क्रोध का शमन किया तथा उन पर कलियुग द्वारा किये गए अत्याचारों को भूल गए। उन्होंने कहा कि इसी तथ्य के आधार पर मैं आपको क्षमा प्रदान करता हूँ क्योंकि मैं उक्त महान आत्माओं का अत्याधिक सम्मान करता हूँ। इस सामूहिक अच्छाई के कारण मैं अपनी समस्त व्यक्तिगत समस्याओं को त्याग देता हूँ। ऐसा होने दो। अर्थात यह घटना घटित होने दो।

कलिकाल में ही, सतयुग का सूर्य, सत्य की दुनिया, प्रकाशमय प्रबोधन संस्कार का समय (age of enlightenment) अल्प काल में शीघ्र ही आ रहा है अर्थात ये सब धरती पर वापस लौट आयेंगे। वे सन्त महात्मा जो वनों में सत्य की खोज में तपस्यारत थे उन्होंने इस दुनिया में जन्म धारण कर लिया है। आप उनका दर्शन कर सकते हैं। वे साधु-स्वभाव के हैं। वे स्पष्टतया कृत्रिम जीवन के उपहास को देख सकते हैं। वे जानते हैं कि यह सब व्यर्थ एवं भ्रामक हैं परन्तु फिर भी वे यह न जान पाये कि वास्तविक सत्य क्या है। परन्तु अब समय

निकट आ गया है और इसका हल खोज निकालना है तथा इस समस्या की पूर्ति करनी है।

आपके महान देश में इसका हल निकल आया है और वह भी अभी अब। एक हजार लोग इसमें कार्य-रत हैं जिन्होंने इसे समझ लिया है। तीन सौ के लगभग लोग ऐसे हैं जो साहस के साथ इसमें सक्रिय भाग लेकर भिन्न भिन्न स्थानों में इस समस्या-पूर्ति में संलग्न हैं। मुझे आपके इस पुरातन नगर किंग्सटन में आने की अत्याधिक प्रसन्नता है। यहां पर ही राजा को राज सिंहासन पर आरूढ़ कराने के लिए प्रस्तर पधराया गया था। इस सम्बन्ध में कुछ न कुछ विशेषता अवश्य होनी चाहिए।

परन्तु लोगों ने वास्तविकता के संदर्भ में सचेतनता को खो दिया है। यह बात यहां के निवासियों पर ही लागू नहीं होती वरन प्रत्येक देश में प्रत्येक स्थान पर है आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि भारत में अत्यधिक मात्रा में हैं। वे सब भ्रष्ट होते जा रहे हैं। वे विकासशील हैं। वे नहीं जानते कि विकास से उन्हें क्या प्राप्ति हुई। यदि कोई उनसे कहता है, वे विचार करते हैं, "आप विकास के फल का पूर्ण रूप से आनन्द ले रहे हैं। और आप असत्य भाषण कर रहे हैं"।

अतः आपके लिए यह समझना अत्यावश्यक है कि निर्णय किसी विशिष्ट अर्थ (purpose) के लिए आरम्भ हो चुका है और इसकी पूर्ति के लिए कुण्डलिनी को आपके अन्दर पधराया है। परन्तु मैं यह स्पष्ट कहती हूँ कि वह एक महान् निर्णायक (judge) है और ऐसा निर्णायक आपको समस्त संसार में खोजने पर भी नहीं मिलेगा—क्योंकि वह स्वयं आपकी अपनी मां है। वह निर्व्याज है जो आपको देती ही रहती है। वह आपसे कुछ भी नहीं चाहती है। वास्तव में उसकी कुछ भी इच्छा नहीं है। वह केवल यही चाहती है कि आपकी सम्पत्ति आपको प्राप्त हो। आपको अपनी आत्मा को प्राप्त करना चाहिए। आपको अपनी सारी शक्तियां भी प्राप्त होनी चाहिए। वह आपसे कुछ भी नहीं चाहती है आप अपनी आत्मा को जानो अर्थात उसका ज्ञान प्राप्त करें। और स्वयं स्वयम्भू बन जायें। बस उस की इच्छा यही है। यह आपकी मां है जो आपके साथ बारम्बार जन्म धारण करती रहती है। उस को उत्थान की प्रक्रिया में आपने स्वयं जो जो समस्याएं उत्पन्न की हैं उन सबका लेखा जोखा भी उसके पास लिखित है। वह आपके सम्बन्ध में सब कुछ जानती है। वह आपका परीक्षण उस बिन्दु पर करती है कि आप अपने उत्थान के लिए कितनी श्रद्धा से प्रयत्नशील हैं। यही सब कुछ है।

वह आपको पूर्ण रूप से जानती है। वह जब उठती है तो उन संकेतों को दर्शाती है। वह दिखाती है कि आपके भीतर अन्तःस्थल में क्या त्रुटि है बाधा है। वह आपकी अपनी है केवल आप ही की। इसके अतिरिक्त आपके लिए और कोई बड़ा नहीं है महत्वपूर्ण नहीं है। वह आपकी मित्र है और वह आपका निर्णायक निरीक्षण (judge) भी करती है जिससे आपको सर्व श्रेष्ठ प्राप्ति हो। वह यह भी जानती है कि आपके हित में सर्व श्रेष्ठ क्या है। जैसे जब एक बच्चा बिजली के साकेट पर अपना हाथ रखने की चेष्टा करता है तो मां उसे ऐसा करने को मना करेगी, ऐसा न करो-ऐसा नहीं करना है। परन्तु बच्चा नहीं सुनता है और क्षुब्ध हो उठता है वह फिर भी उसे मनाने को कहती है कि नहीं बेटे तुम यह नहीं कर सकते क्योंकि वह आपसे अत्यन्त स्नेह करती है। स्नेह भी शुद्धातिशुद्ध रूप में जितना कि आप अन्य किसी व्यक्ति से भी आशा नहीं कर सकते। ऐसी महान शक्ति आपके अन्तराल में शिथिल पड़ी है और उचित अवसर की प्रतीक्षा में है कि वह कब जागृत हो। जब वह बीज की germinating शक्ति सदृश प्रस्फुटित होकर ऊपर आ जाती है तो कोई ऐसा होना चाहिए जो आपकी देखभाल कर सके। कोई एक ऐसा व्यक्ति भी होना चाहिए जो आपका मार्ग दर्शन (guide)

कर सके। कोई ऐसा भी होना चाहिए जो उसके गुप्त सन्देश का उद्घाटन (decode) करके आप को जताये कि आपकी उंगलियों से प्राप्त अनुभव के क्या अर्थ हैं तथा आपके अन्दर क्या क्रिया क्रियान्वित हो रही है। अन्यथा आप अपने घाट (Moorings) के बारे में कैसे जान पायेंगे। आप यह भी नहीं जान पायेंगे कि आप कहां जा रहे हैं। और आप अज्ञान के अंधकार में फंस जायेंगे। यह भी सम्भव है यह सब होते हुए भी आपको इस सम्बन्ध में और अधिक ज्ञान प्राप्त न हो। कुण्डलिनी जब उत्थान करती है वह किसी न किसी को अपना माध्यम (mouth piece) बनाना चाहती है। यह ऐसा है कि अचेतनता किसी न किसी माध्यम से वाणी द्वारा प्रकट करना चाहती है। वह कोई न कोई व्यक्ति ही होना चाहिए जिसकी प्रकृति कुण्डलिनी के अनुरूप हो। जो आपसे धन कमाने के इच्छुक हैं और आपको लूटते हैं वे आपको मंझधार में छोड़ देंगे। तो बताइये ऐसे लोगों को कैसे गुरु कहा जा सकता है। वे चोर हैं जो आपके दरवाजे के बाहर खड़े हैं। वे तो उपयुक्त अवसर की खोज में हैं कि किस प्रकार आपको अपने चंगुल में फंसायें क्योंकि उनका निर्णय यथापूर्व हो चुका है और वे discarded हैं और जेल में जायेंगे और चाहते हैं कि अधिक से अधिक लोग उनके साथ जेल में जायें।

कुण्डलिनी जब उत्थान करती है तो सर्व प्रथम आपको शारीरिक सुख प्रदान करती है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि यह आपको स्वास्थ्य लाभ कराती है। कैन्सर बिना कुण्डलिनी जागरण के cure नहीं हो सकता। यह बात मैं कब से कहती रही हूँ—जब किसी डाक्टर को कैन्सर का रोग हो जाता है तो वह मेरे पास आता है और ठीक हो जाता है। परन्तु मैं यहां कैंसर के उपचार करने के लिए नहीं बैठी हूँ। मेरे सहजयोगी भी कैंसर पीड़ितों के उपचार में रुचि रखते हैं? बिल्कुल नहीं कोई भी नहीं। परन्तु यदि आप अपना Realisation लेना चाहते हैं तो आपके कैंसर का उपचार भी हो जायेगा और आपका स्वास्थ्य भी सुधर जायेगा। मेरा मंतव्य उनसे है जो आत्म-साक्षात्कार पा चुके हैं और यहीं पर ही विराजमान हैं। वे शारीरिक अथवा मानसिक व्याधियों से ग्रसित थे उनमें से कुछ तो मिरगी, मूर्छा (epileptic) जैसे असाध्य रोगों से पीड़ित थे और अत्यंत गम्भीर शारीरिक समस्याओं से घिरे थे उनमें से कुछ को रक्त कैंसर भी था तथा अन्य लोगों में से कुछ अन्य शारीरिक भौतिक व्याधियों की समस्या से आतंकित थे।

इन सब बातों के होते हुए भी आपको पवित्रतम का सामना करना है—ईश्वरीय प्रेम का—उसकी इच्छा का—कुण्डलिनी उसकी इच्छा का प्रतिनिधित्व करती है। इच्छा दया और प्रेम का समुद्र है। वह आप पर अपना राज्य न्यौछावर करना चाहता है। वह आपको अपने साम्राज्य का राजकुमार बनाना चाहता है। यह एक अत्यंत गम्भीर विषय है। इस प्वाइन्ट पर समग्र एकाग्रता से ध्यान देना है।

निर्णय (judgement) अवश्य ही लिया जाना है। हमारे अन्तस्थल स्थित शक्ति ही निर्णय लेने को तत्पर है। यह शक्ति ईश्वर की इच्छा है। उस सर्व शक्तिमान की जिसने हमें हमारी स्वतंत्रता प्रदान की है। वह इसको चेलेंज नहीं करने जा रहा है। उसकी प्रबलता, उसका पराक्रम, उसकी सामर्थ्य और उसकी शक्तियां हमारी स्वतंत्रता के आड़े नहीं आयेंगी। परन्तु उसकी इच्छा आपके भीतर कुण्डलिनी पर स्थित है और यह इच्छा आपके अन्दर ही उत्थान करती है। आपका उद्बोधन करती है (enlighten) परन्तु यह आपको बाध्य (force) नहीं करेगी यह आपकी स्वतंत्रता का हनन नहीं करेगी। यह आपको देखने के लिए उद्बोधित (enlighten) करेगी। आपको इस कमरे में रहने की स्वतंत्रता है परन्तु यह आपको बाधित

नहीं करेगी कि आप यहां ही बैठें अथवा वहां बैठें अथवा आप चले जायें। आप पर किसी प्रकार का भी बन्धन नहीं है। परन्तु आपको स्थान दिया गया है। जो उद्‌बोधित है (enlightened) सो आप अपनी स्वतंत्रता का प्रयोग और अच्छी तरह से करें और अधिक समझदारी से क्योंकि आप उद्‌बोधित है। आप देख सकते हैं और फिर आप जानते हैं कि क्या स्वीकार करना है और क्या अस्वीकार करना है।

प्रथम तो आपका उद्‌बोधन करना है अर्थात आपको प्रकाशमय बनाना है। जब तक कि आप प्रकाशमय नहीं हो जाते तब तक आप भ्रान्ति में पड़े रहेंगे और स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते हैं। यह आपकी स्वतंत्रता पर छोड़ दिया जाता है निर्णय लेने के लिए। वह आपका उपचार कर चंगा करती है। वह आपका सुधार करती है। वह समस्त मंगल-कारी एवं सुखदायक वस्तुएं आप पर न्यौछावर करती है। यह आपको स्थूल तल की चिन्ताओं से मुक्त करा देती है। आत्मसाक्षात्कार के पश्चात, बहुत से लोगों ने अपनी सांसारिक समस्याओं का समाधान पा लिया है। यह नहीं कि वे मि० फोर्ड (Mr. Ford) अथवा उनके समकक्ष धनाढ्य बन गए हैं परन्तु उनकी स्थिति में परिवर्तन आ गया है और उनकी सांसारिक समस्याओं का समाधान हो गया है। हमारे अन्तराल में एक ऐसा केन्द्र भी स्थापित है जिससे कौटुम्बिक समस्याओं का हल भी निकाला जा सकता है। पति पत्नियों की समस्याओं का समाधान होने से आप विमुक्त हो जाते हैं। आपकी उन वस्तुओं पर पकड़ जो आपको चिन्तित करती हैं शिथिल होकर आपको मुक्ति दिलाती है। अब आप अधिक स्वतंत्रता के साथ देख सकते हैं कि हमें क्या चयन करना है और कौनसा कोर्स अप-नाना है। इन ढेर सारे कनसेशन्स, सुख सुविधाएं तथा हर सम्भव सहायता प्रदान किये जाने के पश्चात आपका निर्णायक निरीक्षण (judge) किया जायेगा। क्या आप किसी ऐसे उदार मजिस्ट्रेट का अनुमान कर सकते हैं।

और ऐसी (अलभ्य) वस्तु हमारे अन्तःस्थल में विराजमान है। हम उस ईश्वर को बहुत-२ धन्यवाद देते हैं जिसने हमारे लिए यह सब कुछ किया है। हमारे पास कोई विचार नहीं है। हमने उनको मान्यता प्रदान की है। हमारे अन्तःस्थल की प्रत्येक वस्तु के लिए हमने उन्हें मान्यता दी है। हम उन्हें धन्यवाद देने योग्य भी अपने आपको प्रस्तुत न कर सके (न बना सके)। वे हमारे ऊपर कितने कृपालु हैं उन्होंने जो कुछ भी हमारे कल्याण के लिए किया है हम उनको धन्यवाद के योग्य भी न हो सके। एक क्षुद्र वस्तु के लिए हम हृदय में से निकाल कर छुटकारा पाना चाहते हैं। उसका अस्तित्व फिर भी है। कुण्डलिनी का अस्तित्व भी हमारे अन्दर विद्यमान है। आप इसके विपरीत आचरण करें इसका अस्तित्व रहेगा। मैंने ऐसे कुछ लोगों को देखा है जिनकी कुण्डलिनी को पीटा गया। (फलस्वरूप) भयंकर पीड़ा, वेदना और संताप के चिह्न प्रकट होते हैं। वह रोष में भरकर करवटें बदलती है परन्तु अपना अस्तित्व बरकरार रखती है उस समय तक के लिए जब तक कि आपको वह वस्तु नहीं दे देती जिसके लिए वह वहां पधारती है। ईश्वर की कितनी बड़ी अनुकम्पा है। कहां से आप यह सब खोज पायेंगे। यह सब आपके भीतर है। जिसका work out किया जाना आवश्यक है।

कुछ व्यक्ति आत्मसाक्षात्कार कर लेने के पश्चात वे विलुप्त हो जाते हैं। मैंने पाया कि वे विलुप्त (Disappear) हो गए, Realisation पाने के बाद भी। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? पश्चिम में इसी प्रकार की उन्नति की जाती है। आप तीन पग आगे बढ़ाते हैं और चार पग पीछे की ओर सरकाते हैं। वास्तव में आपको कौतुहल होगा। मैं नहीं जानती कि पश्चिम वालों के मानस में क्या त्रुटि है कि वे भौतिक पदार्थों की उपलब्धियों के वशीभूत होकर भ्रम में पड़ जाते हैं। परन्तु जब वे सहजयोग में आते हैं तो उनका चरित्र बल निम्न स्तर का होता है। कभी कभी तो यह बात समझ

के बाहर हो जाती है। क्या इन लोगों में आत्म-सम्मान की भावना नहीं है। जब कि भारतीय ग्रामीण, इसको पाते हैं और सम्भाल कर रखते हैं-यथावत—कोई गड़बड़ नहीं—कुछ भी नहीं—वे यथावत वहां है। मैं मानती हूँ कि उलझनें हैं। परन्तु आत्म सम्मान की भावना को प्रश्रय देना चाहिए। यह कभी कभी आपको आतुर होने का अनुभव करा देता है।

कदाचित आपको विदित न हो कि इस देश में मैंने सात या आठ व्यक्तियों पर पूरे चार वर्ष तक श्रम किया था। पूरे चार वर्ष, क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं। यह बात भी नहीं कि आपके अन्दर कुछ त्रुटि है। आप भक्त हैं (seekers), आप सन्त हैं जो इस देश में पैदा हुए हैं। आपकी साधुता को क्या हुआ। आप इतने छिछले, आप इतने बाह्याडम्बरी क्यों हैं। आप गहनता से इसका स्पर्श क्यों नहीं करते। आप अपनी आत्मा को क्यों नहीं समझते। मुझे समझ नहीं आता कि आप अपनी आत्मा का सम्मान क्यों नहीं करते। मै आपका आदर करती हूँ और आपको अत्याधिक प्रेम करती हूँ क्योंकि मैं आपको जानती हूँ। मैं आप लोगों को युगों से जानती हूँ। आप बिगडैल बच्चे हैं। मैं इसको जानती हूँ परन्तु मैं नहीं जानती कि मैं इसको आपके अन्दर कैसे स्थापित करु। कभी-२ तो मेरी दशा आपकी कुण्डलिनी की तरह हो जाती है।

आपको इसकी उपलब्धि के लिए शीघ्रता करनी है। आपको पूर्णतया शक्तिशाली बनना है। आप इसका शमन करो और लोगों से वार्तालाप करें कि यह वस्तु स्थिति और आपत्कालीन स्थिति है। क्या आप नहीं देख पा रहे हैं कि विश्वभर में क्या हो रहा है। क्या आप भ्रान्ति को नहीं देख पा रहे। परन्तु स्थिति को नियंत्रित किया जा चुका है। यदि इसका मुकाबला भी करना पड़ जाये तो इसका सामना बौद्धिक निपुणता के साथ किया जाये ना कि आप अपने को अपराधी स्वीकार लें। तथा वायट-नाम। क्या सुन्दर विचार है। कृपया यहां विरा-जिये। आराम कुर्सी अभ्यस्त राजनीतिज्ञ वाइटनाम के विषय में विचार कर रहे हैं अथवा फाइल कर देंगे।

आप चयन किये गए व्यक्ति हैं जिन्होंने इसको पाना है और यह होकर रहेगा। परन्तु सत्य की उपलब्धि के लिए आप सैकड़ों बार सोच विचार करेंगे और मैली कुचैली सर्कल में परिभ्रमण (get into) करेंगे यही खटका है। मैं इसके लिए किस को दोषी ठहराऊँ। इन भयंकर गुरुओं को अथवा इन भयानक लोगों को जिन्होंने आपके लिए "शो" की रचना की है अथवा यह पुण्यशीलता (morality) के प्रति आपका अभद्र व्यवहार है। मुझे तो यह देखकर कंपकपी (shudder) पैदा होती है कि किस प्रकार लोग इन घृणित वस्तुओं को स्वीकारते हैं। आज से यह आपका उत्तरदायित्व है कि आप जिज्ञासुओं को सत्य के अनुशीलन से अवगत करायें और उन्हें बतायें कि कृपया इसका अवलोकन करें और ग्रहण करें--पायें। क्योंकि आप उनके सहयोगी हैं। आप ही उनके निकटतम संबंधी हैं। आप अपने आत्म साक्षात्कार के पश्चात भी उनको कैसे छोड़ सकते हैं। यदि आपको स्वर्ग के साम्राज्य में स्थान मिल जाता है तो आप उनको नहीं भुला देंगे। उनके बारे में विचार करेंगे और आप प्रसन्नचित नहीं रह सकते हैं। आप उनका ध्यान रखेंगे। आप अपना आत्म साक्षात्कार पा लेने के बाद भी जब तक कि आप उन सन्तों को जो अपनी अज्ञानता (ignorance) के कारण अपने स्वयं को गंवा बैठे हैं आप उनका ध्यान रखेंगे मुझे आपके माध्यम से ही यह हल निकालना है। मैं इस को निपट अकेली हल न कर पा सकूंगी। यदि मैं अकेली इसको सम्पन्न कर पाती तो कठिनता ही कुछ नहीं थी। यदि ईश्वर इस तरीके से हल कर सकता है तो इनको Realisation दें और बस उनको पूर्णतः स्थिर करे। परन्तु ऐसा न होगा। क्योंकि

आपके पास स्वतंत्रता है। आपके पास स्वतंत्रता क्यों है ? क्योंकि आपकी इस स्वतंत्रता के बिना आप में चरित्र बल नहीं आ सकता जिसके आधार पर आपको ऊपर उठाया गया है हम यह Realise नहीं करते कि हम आज कहां हैं—अर्थात किस स्थिति में हैं हम साधना नहीं करते । कभी-२ तो मैं यह अनुभव करने लगती हूं कि मैं दीवारों से बातें कर रही हूं आपको विदित होगा कि बहुत से लोग घड़ियों के क्रीत दास हैं : उनके पास समयाभाव है । मेरे पास भी समय नहीं है मैं अत्यंत व्यस्त हूं । आप समय की बचत किस लिए कर रहे हैं । यह विचार आपके मन में कैसे आया—हमारे पूर्वजों (दादा परदादा) ने कभी नहीं किया । आप समय की बचत क्यों कर रहे हैं ? किसके लिए ? आप समय की बचत कर रहे हैं अनुरूप युक्त (becoming) होने के लिए न कि इसको व्यर्थ में गंवा देने के लिए यथा पार्कों में भ्रमण अथवा भयानक स्थान जैसे रेस आदि में ।

तदनरूप (becoming) होने के लिए आप समय की बचत कर रहे हैं क्योंकि आप एक हीरे हैं। आपको अपने स्वयं को काट तराश कर सुन्दर सुडौल आकृति में ढालना है । आप इसको बचत व्यर्थ गवाने के लिए नहीं कर रहे हैं । मेरी दृष्टि में यह सर्व श्रेष्ठ विज्ञापन होगा कि "पचास पौन्ड बचाओ तीन हजार व्यय करने के लिए" ऐसा ही कुछ आप अपना समय बर्बाद करने के लिए नहीं बचा रहे हैं । आप समय की बचत कर रहे हैं कुछ विशेष प्रयोजन हेतु जो अमूल्य, विशिष्ट और अत्यधिक मार्मिक है बहुत कुछ वह जिसकी खोज वे बहुत दिनों से कर रहे हैं । परन्तु अभी तक मैं यह नहीं जान पाई हूं कि आपको गहनता के उस स्तर पर कैसे जमाये रखूं । निस्सन्देह कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं जो उच्च कोटि के चरित्र बल से युक्त हैं । जो पूर्ण रूपेण संतुष्टि का अनुभव कर रहे हैं । आपको कदाचित इस बात का ज्ञान न हो कि ईश्वर ने इस देश में कितना कुछ किया है । उदाहरणार्थ मैं Stonehenge देखने के लिए गई, Stonehenge पृथ्वी माता की रचना है । आप इस तथ्य की जांच बाइब्रेशन्स द्वारा कर सकते हैं । ऐसी बहुत सी वस्तुएं इस देश में विद्यमान हैं। किन्सटन भी वायब्रेशन्स से भरपूर है। मुझे महान आश्चर्य हुआ । आपने क्या पाया ? अर्थात आपको कैसा लगा ? उस गाड़ी में लगभग एक सौ यात्री होंगे जो हमारे साथ गए थे । कुछ उतराई चढ़ाई पैदल ही पार कर पहुँच गए । कुछ अन्दर जा पहुँचे । कुछ बाहर निकल आये । वे अभी कुछ निश्चित नहीं कर पा रहे थे । अभी भी सचेतन सूक्ष्म ग्राह्यता से उनका निकट का सम्बन्ध न था (still no proximity to sensitivity) सत्य के प्रति सचेतना कुछ भी नहीं थी । वे अनुभव भी नहीं कर सकते थे । यह होगा—सम्भव है । हल निकलेगा । मुझे दृढ़ निश्चय है कि यह अवश्य हल होगी। मैं अत्यधिक आशावादी हूं बहुतों में से एक आशावादी व्यक्ति हूं जिनको आपने अभी तक देखा है, परखा है। देखिये, मैं विश्वास करती हूं कि आशावादिता मेरी प्रकृति है । यह घटना घटित होने जा रही है। केवल आपकी तथाकथित "स्वतंत्रता" मार्ग में बाधा डाल रही है। सो आप उसको समझने का प्रयास करें कि यह स्वतंत्रता जो आपको प्रदान की गई है वह आपको अपनी आत्मा में विलीन करने हेतु प्रदान की गई न कि पशु बनने के लिए। एक पशु को—एक मुर्गी के बच्चे को आत्म साक्षात्कार देने से क्या लाभ है । क्या मैं उसको भी Realisation दे सकती हूं ? यही उद्देश्य है ?

बहुत से आदमी कहते हैं कि "मां मैंने बहुत सारे सत्कर्म किये हैं" । मैं पूछती हूं कि क्या-२ अच्छे कार्य सम्पादन किये हैं। उसने कहा कि मैं चिकन नहीं खाता । मैंने कहा कि आप मेरे लिए चिकन क्यों बचा रहे हैं अच्छा हो यदि आप अपने को बचायें। सब प्रकार के कौतुहलवर्धक विचार (funny ideas) उनमें भरे हैं ।

आप भक्त लोग (seekers) इस सुन्दर जीवन वृक्ष की कलियों के सदृश हैं यह वे हैं जिनके लिए सृष्टि की संरचना की गई है। ये वे हैं जिन्होंने कुछ पाना है। ये उनमें से हैं जिनको कुछ अपनाना है। उनके अन्दर समस्त विश्व प्रफुल्लित (blossomed) एवं पल्लवित हो उठा है। और वे whatworms होने के इच्छुक हैं। इस सम्बन्ध में आप विचार कीजिये। जरा सोचिये।

ईश्वर की महान अनुकम्पा से हम आत्म साक्षात्कार का प्रोग्राम आरम्भ करते हैं। कदाचित यह प्रक्रिया सेकिण्ड से भी सूक्ष्म समय लेती है। सम्भवतया यह घटना घटित भी हो गई हो क्योंकि आज मैं (अपने विचार से) कुछ अधिक असामान्य हूँ··· जागृति प्रदान हेतु। किम्सटन एक सुन्दरतम स्थान है। मैं अनुभव करती हूँ कि एक दिन यह महत्वपूर्ण सुरम्य स्थान हो जायेगा। अब हमें देखना है कि आप लोग इस शक्ति का जो यहां इस सुरम्य स्थल में बह रही है, किस मात्रा में उपयोग कर पाते हैं। मुझे आशा है कि कुछ न कुछ हल अवश्य निकलेगा।

आत्म साक्षात्कार के पश्चात आपको इसे गम्भीरता से लेना है। आपको ही हल निकालना है। आपको इसमें सक्रिय होना है क्योंकि इस को पा लेने के पश्चात भी यह बात ऐसी नहीं है कि अकस्मात ही सूर्य अथवा चन्द्र पर छलांग लगाने का अभियान पूरा हो जायेगा। चन्द्रमा तक पहुँचने पर भी आपको क्या सिद्धि प्राप्त होगी। आप कुछ भी न समझ पा सकेंगे। आपको अपनी आत्मा के समस्त क्षेत्रों में विहार करना होगा—क्योंकि गतिविधि अन्तःस्थल में ही आरम्भ होगी। आपको अपने ध्यान (attention) को आपने आन्तरिक क्षेत्र में ही स्थापित करना चाहिए और उसमें स्थिरता लानी है। स्थिरता प्राप्त होते ही आपको वृत्तियां अथवा ध्यान से व्यर्थ की वस्तुओं की पकड़ स्वतः शिथिल हो जायेगी। समस्त प्राथमिकताओं में परिवर्तन आ जायेगा। सबसे महत्वपूर्ण एवं विचित्र बात यह है कि जब यह (कुण्डलिनी) सहस्रार का भेदन करती है आनन्द का स्रोत निर्झर होने लगता है और आपके हाथों की हथेलियों में शीतल बयार (Cool Breeze) का अनुभव होने लगता है—उस पवित्रतम ईश्वर (Holy Ghost) की शीतल बयार—और उसका अनुभव आप सर्व-व्यापक रूप से हर जगह करने लग जायेंगे। आप इसको ज्ञात कर सकते हैं। अब आप अपने स्वयं को तथा अन्य पुरुषों का निरीक्षण कर सकते हैं। स्वचालित रूप से आप दूसरे लोगों की सहायता भी कर सकते हैं। इसके लिए आपको कहीं बाहर नहीं जाना है। आप को इसके लिए कोई औषधि भी नहीं लेनी है। आपको कुछ भी नहीं लेना है। वहां आप केवल उपस्थित रहें। आप अन्य लोगों की सहायता करते हैं और अन्यों को मुक्ति दिलाने में सहायक होंगे जैसे कि समस्त मैकेनिज्म क्रियाशील हो उठती है। सारी की सारी तकनीक काम आरम्भ कर देती है। और आप समस्त वस्तुओं का अवलोकन आरम्भ कर देते हैं। आप चकित हो जायेंगे।

आपको यह ज्ञान प्राप्त करना होगा किस प्रकार अपने स्वयं पर तथा अन्य लोगों पर क्रियाशील (workout) हो। यह एक अच्छा कौतुहल है। हम सब के सब इस बृहत कौतुहल की चित्तवृति में हैं। आप भी हमारे संग आमोद प्रमोद में भाग लेकर अनन्त की अनुभूति प्राप्त करें। यह अत्यंत विस्मय-कारी है। कृपणता के लिए कोई गुंजाइश नहीं। केवल यही बात लोगों के मन में अखरती है और वे महसूस भी करते हैं कि ये लोग इस प्रकार (विचित्रता से) क्यों और क्या कर रहे हैं। वयोवृद्ध एवं विकसित पुरुषों की नांई हम छोटे छोटे (अल्प वयस्क) अबोध बालकों की ओर क्यों दृष्टि रखते हैं। वे अपने हाथ अग्नि में क्यों रखने जा रहे हैं।

ईश्वर आपको सर्वदा सम्पन्न एवं प्रसन्न रखे।

जय निर्मलमाते जगदंबे

—प्रमोद भाई पेटकर, पूना

जय जगदंबे जय अंबे ।
जय गणेश जी की माँ अंबे ॥ धृ ॥
जय महाकुण्डलिनी तू अंबे ।
जय गणेश जी की माँ अंबे ॥१॥
जय विष्णु की लक्ष्मी तू अंबे ।
जय गणेश जी की माँ अंबे ॥२॥
जय ब्रह्मा की सरस्वती तू अंबे ।
जय गणेश जी की माँ अंबे ॥३॥
जय शिवजी की पार्वती तू अंबे ।
जय गणेश जी की माँ अंबे ॥४॥
जय राम की सीता तू अंबे ।
जय गणेश जी की माँ अंबे ॥५॥
जय कृष्ण की राधा तू अंबे ।
जय गणेश जी की माँ अंबे ॥६॥
जय येशु की मेरी तू अंबे ।
जय गणेश जी की माँ अंबे ॥७॥
जय सहस्रार स्वामिनी तू अंबे ।
जय गणेश जी की माँ अंबे ॥८॥
जय मोक्ष प्रदायिनी तू अंबे ।
जय गणेश जी की माँ अंबे ॥९॥
जय आदिशक्ति तू जगदंबे ।
जय गणेश जी की माँ अंबे ॥१०॥
जय आदि माया तू जगदंबे ।
जय गणेश जी की माँ अंबे ॥११॥
जय महामाया तू जगदंबे ।
जय गणेश जी की माँ अंबे ॥१२॥
जय सर्वस्वदायिनी तू अंबे ।
जय गणेश जी की माँ अंबे ॥१३॥
जय विश्व व्यापिनी तू अंबे ।
जय गणेश जी की माँ अंबे ॥१४॥
जय त्रिभुवन स्वामिनी तू अंबे ।
जय गणेश जी की माँ अंबे ॥१५॥
जय निर्मलमाते जगदंबे ।
जय गणेश जी की माँ अंबे ॥

Registered with the Registrar of Newspapers under Regn. No. 36999/81

With best compliments from :

JANAKI JEWELLERS

C. A. PENDURKAR & CO.

C. R. AGRAWAL MARKET, MONGHI BAI ROAD, VILE PARLE,
BOMBAY-400057

Edited & Published by Sh. S. C. Rai, 43, Bunglow Road, Delhi-110007 and
Printed at Ratnadeep Press, Darya Ganj, New Delhi-110002.
One Issue Rs. 5.00 Annual Subscription Rs. 20.00 Foreign [By Airmail £ 4 $ 8]